



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 24]
No. 24]

नई दिल्ली, बुधवार, फरवरी 6, 2013/माघ 17, 1934
NEW DELHI, WEDNESDAY, FEBRUARY 6, 2013/MAGHA 17, 1934

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महाविदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 फरवरी, 2013

अन्तिम जांच परिणाम

विषय :—यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल के आयातों के संबंध में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा जांच - अंतिम जांच परिणाम ।

सं. 15/16/2011-डीजीएडी.—क. मामले की पृष्ठभूमि

1 यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) ने समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए अन्य बातों के साथ-साथ यूरोपीय संघ, सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका (जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित आई टी सी एस एच के उपशीर्ष 2907.11 तथा 2707.60 के अंतर्गत आने वाले "फेनोल" (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी । अंतिम जांच परिणाम 15 फरवरी, 2003 को अधिसूचित किए गए थे और केन्द्र सरकार द्वारा 24 मार्च, 2003 की अधिसूचना सं. 47/2003-सी.शु. के तहत निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू किया गया था । लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा 14 जुलाई, 2006 को शुरू की गई थी और अंतिम जांच परिणाम 13 जुलाई, 2007 की अधिसूचना सं. 15/4/2006-डी जी ए डी के तहत जारी किए गए थे जिन्हें 25 जुलाई, 2007 को संशोधित किया गया था । संशोधित निश्चयात्मक पाटनरोधी

शुल्क सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 98/2007-सी.शु. के तहत 31 अगस्त, 2007 को लागू किया गया था । पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा 10 अगस्त, 2007 को शुरू की गई थी और पाटनरोधी जांच की निर्णायक समीक्षा का अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना सं. 15/09/2007 के तहत 4 अगस्त, 2008 को जारी किया गया था और निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क सी.शु. अधिसूचना सं. 114/2008 के तहत 31 अक्टूबर, 2008 को लागू किया गया था ।

2. प्राधिकारी को मै. मैरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि. ("आवेदक/याचिकाकर्ता"), जो संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की एक आयातक है, से एक विधिवत पुष्टिकृत आवेदन प्राप्त हुआ जिसमें संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा करने के बारे में प्राधिकारी से अनुरोध किया गया था । आयातक ने मध्यावधि समीक्षा की मांग करने हेतु प्रमुख आधारों के रूप में पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन को प्रभावित करने वाले मापदंडों में परिवर्तन और घरेलू उद्योग प्रचालन निष्पादन में सुधार का दावा किया । प्राधिकारी ने इस बात पर विचार किया कि इन परिस्थितियों में हुए परिवर्तन के कारण मध्यावधि समीक्षा को शुरू करना आवश्यक बन गया है ।

3. इस बात से संतुष्ट होने के बाद कि आवेदक ने समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए पर्याप्त सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराई है, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमवली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 (5) के अनुसार 8 दिसंबर, 2011 की अधिसूचना सं. 15/16/2011-डी जी ए डी के तहत संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा जांच शुरू की । निर्दिष्ट प्राधिकारी के अनुरोध के बाद केन्द्र सरकार ने संबद्ध जांच पूरी करने और अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित करने के लिए समय में 6 फरवरी, 2013 तक विस्तार की अनुमति प्रदान की ।

ख. प्रक्रिया

4. इस कार्यवाही में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- I. संबद्ध देशों से फेनोल के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा हेतु प्राधिकारी को मै. मैरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि., जो संबद्ध वस्तु की आयातक और उपभोक्ता है, से एक आवेदन प्राप्त हुआ ।
- II. इस बात से संतुष्ट होने के बाद कि याचिकाकर्ता ने मध्यावधि समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए प्रथमदृष्टया पर्याप्त सूचना प्रस्तुत की है, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के अंतर्गत 8 दिसंबर, 2011 की अधिसूचना सं. 15/16/2011-डी जी ए डी के तहत यूरोपीय संघ, सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर पूर्व में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा जांच शुरू की । वर्तमान समीक्षा के क्षेत्र में मूल अधिसूचना के सभी पहलू शामिल हैं ।

- III. नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे निर्धारित समय के भीतर निर्धारित प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देश में सभी निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें ।
- IV. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मांगने के लिए प्राधिकारी ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के साथ निर्यातक प्रश्नावलियां संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु के समस्त ज्ञात उत्पादकों और/अथवा निर्यातकों को भेजी ।
- V. उक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों ने प्रश्नावली के अपने उत्तर दायर किए हैं । इन 4 कंपनियों को छोड़कर उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने प्रश्नावलियों के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं ।

- क. मेरीसोल आर एस ए पी टी वाई, दक्षिण अफ्रीका
- ख. मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर, पी टी ई लि., सिंगापुर (एम पी एस)
- ग. मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेसिफिक) पीटीई लि. (एम ए पी)
- घ. मै. पैट्रोकेम मिडिल-ईस्ट (एफ जैड ई), दुबई ।

- VI. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना हेतु भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं ।

- क. सी. जे. शाह एंड कंपनी, मुंबई
- ख. हरेश कुमार एंड कंपनी, मुंबई
- ग. पी सी एल इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली
- घ. कांतिलाल मणिलाल एंड कंपनी, मुंबई
- ङ. सोनकमल इंटरप्राइजेज, मुंबई
- च. खेतान ब्रदर्स, मुंबई
- छ. शुभम, डाईज एंड कैमिकल्स लि., दिल्ली

- ज. एक्रोन इंटरप्राइजेज, अहमदाबाद
- झ. नाइकनवारे कैमिकल्स लि., मुंबई
- ञ. पारस डाईज एंड कैमिकल्स, नई दिल्ली
- ट. टोरेट फार्मास्युटीकल्स लि., गुजरात
- ठ. यूनाइटेड फास्फोरस लि.,
- ड. रेजिन्स एंड प्लास्टिक लि., मुंबई
- ढ. कैलाश पॉलिमर, नई दिल्ली
- ण. सैन्ट्रम मेटेलिक्स प्रा.लि., मुंबई
- त. वंडर लेमिनेटघस, प्रा.लि., पश्चिम बंगाल
- थ. मेघदेव एंटरप्राइजेज, अहमदाबाद
- द. सतगुरु इंटरनेशनल, नई दिल्ली
- ध. हाई पॉलिमर लैप्स लि., नई दिल्ली
- न. रेनबो कलर्स एंड कैमिकल्स गुजरात
- प. ब्लीच मार्केटिंग प्रा.लि., गुजरात
- फ. कारमैन इंटरनेशनल (प्रा.)
- ब. कृष्णा एंटीऑक्सीडेंट्स प्रा.लि., मुंबई
- भ. एन जी पी इंड लि., नई दिल्ली
- म. फार्मसन फार्मास्युटीकल गुजरात लि., बड़ौदा
- य. इंडिया ग्लाइकोल्स लि., नई दिल्ली
- र. सिंह प्लास्टीसाइजर्स एंड रेजिन्स (आई) प्रा.लि., नई दिल्ली

इसके उत्तर में निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने अपने अनुरोध दायर किए हैं -

- क. मैरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि.

- ख. ग्रीन प्लाई इंड लि.
- ग. एग्जिम-कॉर्प इंडिया प्रा.लि.
- घ. सैंचुरी प्लाईबोर्डर्स (आई) लि.
- ड फेडरेशन ऑफ इंडियन प्लाईवुड एंड पेपर इंडस्ट्री
- VII. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से जांच अवधि और पूर्ववर्ती तीन वर्षों के लिए आयात आंकड़े मांगे गए थे । संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की सूचना डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों से ली गई थी ।
- VIII. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- IX. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में क्षति विश्लेषण करने के लिए घरेलू उद्योग के रूप में मै. हिंदुस्तान आर्गेनिक लि. ने सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं । इसी अवधि के दौरान अन्य घरेलू उत्पादक से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई थी ।
- X. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने 29 मई, 2012 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को अवसर भी प्रदान किया । इसके अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी में परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए 27 दिसंबर, 2012 को सभी हितबद्ध पक्षकारों को सुनवाई का एक अन्य अवसर प्रदान किया गया था । जिन पक्षकारों ने सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त किए थे, उनसे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों में दिए गए तर्कों पर इस जांच परिणाम में जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है ।
- XI. वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच अवधि अप्रैल-जून, 11 तक की है । तथापि, क्षति विश्लेषण में अप्रैल, 07-मार्च, 08, अप्रैल, 08-मार्च, 09, अप्रैल, 09-मार्च, 10 और अप्रैल, 10-जून, 11 के वर्ष शामिल हैं । इस

बात का पता लगाने के लिए कि क्या जांच अवधि के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन, क्षति और क्षति मार्जिन स्थायी स्वरूप के हैं, प्राधिकारी ने जांचोत्तर अवधि अर्थात् जुलाई, 2011 से दिसंबर, 2011 तक की अवधि के लिए आंकड़ों की जांच की।

- XII. सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के अनुसार क्षति रहित कीमत निर्धारित करने के लिए लागत जांच की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा अथवा शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं होगी। क्षति रहित कीमत की गणना पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुसार की गई है।
- XIII. आवेदक द्वारा प्रदत्त आंकड़ों का आवश्यक समझी गई सीमा तक मौके पर सत्यापन किया गया था। जांच के दौरान प्राधिकारी ने प्रदत्त सूचना की पर्याप्तता और यथातथ्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट किया। उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है।

निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने निर्धारित समय के भीतर प्रकटन विवरण पर अपने उत्तर प्रस्तुत किए -

- एग्जिम-कॉर्प इंडिया प्रा. लि.
- मै. एच ओ सी एल, घरेलू उद्योग
- मै. सेंचुरी प्लाई बोर्ड (आई) लि.
- मै. मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक), सिंगापुर
- मै. मैरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि. ("आवेदक/याचिकाकर्ता")
- मित्सुई फेनोल सिंगापुर, पीटीई, लि., सिंगापुर

- पेट्रोकेम मिडिल ईस्ट एफ जैड ई, यू ए ई
- मैरीसोल आर एस ए (पी टी वाई) लि., दक्षिण अफ्रीका

यह उल्लेख किया जाता है कि प्रकटन विवरण जारी होने के बाद उपर्युक्त हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर अंतिम जांच परिणाम के संगत शीर्षों में कार्रवाई की गई है ।

XIV. जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपना विश्लेषण दर्ज किया है ।

XV. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी । संतुष्ट होने के उपरांत प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता प्रदान की है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है । जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं ।

XVI. *** यह चिन्ह इस अंतिम जांच परिणाम में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

5. मूल जांच में और वर्तमान समीक्षा आवेदन में भी विचाराधीन उत्पाद फेनोल है ।

ग.1 घरेलू उद्योग के विचार

6. मूल जांच और वर्तमान मध्यावधि समीक्षा जांच में शामिल उत्पाद फेनोल है । वर्तमान मध्यावधि समीक्षा में विचाराधीन उत्पाद वही है जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जाचों में अवधारित किया है ।

ग.2 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

7. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के बारे में किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई टिप्पणी या अनुरोध दायर नहीं किया है।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

8. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मूल जांच में और वर्तमान समीक्षा आवेदन में भी विचाराधीन उत्पाद फेनोल है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई मूल जांच के अनुसार उत्पाद को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :

"फेनोल सामान्यतः सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय-29 के अंतर्गत वर्गीकृत एक मूल कार्बनिक रसायन है। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष सं. 2907.11 के अंतर्गत वर्गीकरणीय है। उत्पाद का विपणन दो ग्रेडों क्रिस्टेलिन और हाइड्रेटिड में किया जाता है। दोनों ग्रेड फेनोल के प्रवाह संबंधी विशेषताओं के आधार पर अलग-अलग हैं। उत्पाद का विवरण दो रूपों-खुले और डिब्बा बंद में किया जाता है। खुली बिक्री सामान्यतः बल्क में होती है जबकि डिब्बा बंद परेषण काफी छोटे कन्टेनर भारों के हो सकते हैं। फेनोल का उपयोग फेनोल फार्मेलडीहाइलड रेजिनो, लेमिनेटों, प्लाईवुड, पार्टिकल बोर्डों, बिस्फेनोल-ए, अल्कायल फेनोल्स भेषजों, डाई फिनाइल ऑक्साइड आदि के विनिर्माण में किया जाता है।"

9. विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई तर्क नहीं दिया है। वर्तमान जांच मध्यावधि समीक्षा जांच होने के कारण वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र भी वही रहता है जैसा कि मूल जांच में है।

घ. घरेलू उद्योग

घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

10. एच ओ सी एल का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है। अतः एच ओ सी एल नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है।

घ.2 निर्यातक, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

11. घरेलू उद्योग के आधार और क्षेत्र के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई तर्क नहीं दिया है।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

12. यह नोट किया जाता है कि केवल हिंदुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि. (एच ओ सी एल) ने संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादक के रूप में जांच शुरूआत संबंधी सूचना का उत्तर दिया

है । कंपनी ने दावा किया है कि संबद्ध वस्तु के केवल दो उत्पादक हैं-एस आई ग्रुप भारत में दूसरा उत्पादक है । एच ओ सी एल ने दावा किया है कि संबद्ध वस्तु का उसका उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है । आगे यह नोट किया जाता है कि वर्तमान जांच में भाग लेने वाले किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने एच ओ सी एल के दावे का खंडन नहीं किया है । प्राधिकारी के रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना से यह पता चलता है कि एच ओ सी एल का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है और इसी लिए एच ओ सी एल को नियमों के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" माना गया है ।

ड विविध अनुरोध

ड1 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

13. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- I. पाटनरोधी नियमावली के संशोधित नियम 23(1 क) में समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए केवल सकारात्मक सूचना की अपेक्षा की गई है । इस प्रकार नियम 23(1) के अंतर्गत अब मांगी गई सूचना पुराने नियम 23 से सर्वथा भिन्न है ।
- II. घरेलू उद्योग का यह दावा कि मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत इस आधार पर अनुचित है कि शुल्क समाप्ति की जरूरत की पुष्टि आवेदक द्वारा नहीं की गई है, स्वीकार्य नहीं है क्योंकि संशोधित नियम 23 में जांच की शुरुआत हेतु केवल सकारात्मक सूचना प्रस्तुत की जाती है जिसे आवेदक ने उपलब्ध करा दिया था ।
- III. आवेदक के लिए पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति की जरूरत की पुष्टि करना अपेक्षित नहीं है परंतु केवल समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए सूचना प्रस्तुत करने की अपेक्षा की गई है । यह डी जी ए डी पर निर्भर करता है कि वह इस बात पर विचार कर निर्धारण करे कि क्या 5 वर्ष की समाप्ति से पूर्व पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने के लिए पर्याप्त औचित्य है ।
- IV. प्राधिकारी द्वारा समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए और विभिन्न संगत मापदंडों पर परिवर्तित परिस्थितियों का प्रदर्शन करते हुए आवेदक द्वारा प्रदत्त सकारात्मक साक्ष्य के आधार पर जांच की सही ढंग से शुरुआत की गई थी ।

- V. विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह बहाना बनाते हुए विभिन्न मुद्दों पर की गई आपत्ति न केवल पाटनरोधी नियमों के खिलाफ है अपितु प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के विरुद्ध भी है कि उन्हें पूर्व में नहीं उठाया गया है और इसलिए उन्हें इस चरण पर नहीं उठाया जा सकता ।
- VI. यह एक मान्य सिद्धांत है कि संभावना हेतु जांच का मानक मध्यावधि समीक्षा की तुलना में निर्णायक समीक्षा में उच्च होता है ।
- VII. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत दो अलग-अलग पत्रों में दावा किए गए आंकड़ों के बीच भारी अंतर है । बिक्री मूल्य में 49 प्रतिशत की वृद्धि हुई है परंतु उसे केवल 18 प्रतिशत तक बढ़ा हुआ दर्शाया गया है । परिणामतः जिस कीमत में वास्तव में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है उसमें केवल 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्शायी गई है । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का कोई भी सूचीबद्ध आंकड़ा अब भरोसेमंद प्रतीत नहीं होता है ।
- VIII. आवश्यक तथ्यों का प्रकटन किए बिना और प्राधिकारी द्वारा निष्कर्ष निकाले बिना सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन समय पूर्व है । अर्धन्यायिक प्रक्रिया के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी का दायित्व आवश्यक तथ्यों और मामले में उस जांच परिणाम को उपलब्ध कराने का होता है जिसके बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सार्वजनिक सुनवाई में विचार किया जा सकता है ।
- IX. प्रकटन विवरण जारी होने के बाद निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने अपने विचारों को दोहराया है जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है ।

ड2 घरेलू उद्योग के विचार

14. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- i. यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए पाटन और क्षति की संभावना का निर्धारण करना अपेक्षित है तो याचिका में इसके बारे में कम से कम प्रथम दृष्टया सूचना और साक्ष्य निहित होना चाहिए ।
- ii. आवेदक ने दावा किया है कि शुल्क समाप्ति की जरूरत की पुष्टि करना अपेक्षित नहीं है और मध्यावधि समीक्षा में "समीक्षा की जरूरत" के बारे में मात्र सूचना ही पर्याप्त है । परंतु निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा हेतु ऐसी कोई जांच लागू

नहीं की है । निर्णायक समीक्षा और मध्यावधि समीक्षा के बीच भेदभावपूर्ण नीति अपनाने का कोई औचित्य नहीं है ।

- iii. दायर की गई सूचना में कुछ भी नया नहीं है । इस क्षति विवरण में निहित समस्त सूचना का वैकल्पिक रूप से निर्धारण सत्यापन दस्तावेजों से किया जा सकता है । प्राधिकारी जांच के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सूचना पर विचार कर सकते हैं ।
- iv. कानून में जांच के दौरान मौखिक सूचना के प्रस्तुतिकरण का प्रावधान है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने स्पष्ट तौर पर ऐसा अवसर प्रदान किया है ।
- v. प्रकटन विवरण जारी होने के बाद घरेलू उद्योग ने अपने विचार दोहराए हैं जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है ।

ड3 प्राधिकारी द्वारा जांच

15. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विविध अनुरोधों की प्राधिकारी ने जांच की है और उन पर निम्नानुसार विचार किया है -

- i. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध का संबंध है कि संशोधित नियम 23(1 क) में समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए केवल सकारात्मक सूचना अपेक्षित है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 23(1 क) में निम्नानुसार उल्लेख है :

" (1) निर्दिष्ट प्राधिकारी जहां अपेक्षित हो, अपनी खुद की पहल पर या ऐसे किसी हितबद्ध पक्षकार के अनुरोध पर जो ऐसी समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए सकारात्मक सूचना प्रस्तुत करता है और निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद उचित समयावधि बीत जाती है, किसी पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत की समीक्षा करेंगे और ऐसी समीक्षा के उपरांत निर्दिष्ट प्राधिकारी उस स्थिति में उसकी समाप्ति हेतु केन्द्र सरकार को सिफारिश करेंगे जहां वह इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त या परिवर्तित कर दिया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है और इसलिए अब इसकी जरूरत नहीं है ।"

उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि प्राधिकारी किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा किए गए अनुरोध पर पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत की समीक्षा करेंगे बशर्ते ऐसा पक्षकार ऐसी समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए सकारात्मक सूचना प्रस्तुत करे और

निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद उचित समयावधि बीत गई हो । वर्तमान मामले में पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत के बारे में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सकारात्मक साक्ष्य की जांच करने के बाद और इस बात से संतोष होने के उपरांत कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद पर्याप्त समय बीत गया है, प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 23(1) के अनुसार जांच शुरू की है ।

- ii. जहां तक आंकड़ों की संगतता के बारे में किए गए अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने वर्तमान जांच हेतु आंकड़ों को उनका विधिवत सत्यापन करने के बाद स्वीकार किया है ।
- iii. जहां तक इस अनुरोध का संबंध है, कि मौखिक सुनवाई आयोजित करने से पूर्व आवश्यक तथ्यों का प्रकटन करना जरूरी है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस तर्क में कोई दम नहीं है क्योंकि सार्वजनिक सुनवाई के आयोजन का उद्देश्य हितबद्ध पक्षकारों को जांच से संगत सूचना प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करना होता है जबकि नियम 16 के अंतर्गत अंतिम जांच परिणाम जारी करने से पूर्व प्राधिकारी के विचाराधीन आवश्यक तथ्यों के प्रकटन का उद्देश्य हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारी के विचारार्थ ऐसे तथ्यों पर अपनी टिप्पणियां, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने के लिए अवसर प्रदान करना है ।

च. गोपनीयता

च.1 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

16. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- i. घरेलू उद्योग ने खासकर बिक्री कीमत में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है जबकि एच ओ सी एल की ऐसी कीमतें कंपनी की वार्षिक रिपोर्टों से उपलब्ध हैं । ऐसी कीमतें प्रकाशित वार्षिक रिपोर्टों में मात्रात्मक सूचना के प्रकटन से उपलब्ध हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र में विद्यमान है ।
- ii. एच ओ सी एल ने ऐसा कोई कारण दिए बिना गोपनीयता का दावा किया है कि याचिकाकर्ता ऐसी सूचना के प्रकटन से किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं ।
- iii. प्रथम पत्र के अगोपनीय रूपांतरण में मासिक और त्रैमासिक आधार पर बिक्री, कीमत और लागत के पूर्ण व्यौरे प्रदान किए गए हैं । दूसरी ओर दूसरे पत्र में इन आंकड़ों को सूचीबद्ध किया गया है ।

च.2 घरेलू उद्योग के विचार

17. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :

- i. वार्षिक रिपोर्ट में केवल बिक्री मात्रा और बिक्री मूल्य के बारे में ही सूचना निहित है । इससे निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण नहीं हो सकता । निर्दिष्ट प्राधिकारी निवल बिक्री प्राप्ति पर विचार करते हैं न कि बिक्री मात्रा और बिक्री मूल्य के आधार पर कुल बिक्री की औसत बिक्री कीमत पर ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

18. जहां तक सूचना की गोपनीयता का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में नियमानुसार उपबंध है :-

(1) नियम 6 के उप नियम (2), (3) और (7), नियम 12 के उप नियम (2), नियम 15 के उप नियम (4) और नियम 17 के उप नियम (4) में किसी बात के होते हुए भी नियम 5 के उप नियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों की प्रतियों अथवा निर्दिष्ट प्राधिकारी को जांच के दौरान किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त किसी अन्य सूचना को निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उसकी गोपनीयता के बारे में संतुष्ट होने के बाद उसके द्वारा गोपनीय माना जाएगा और ऐसी किसी सूचना का प्रकटन ऐसी सूचना प्रदाता पक्षकार के विशिष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को नहीं किया जाएगा ।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रदाता पक्षकार की राय में ऐसी सूचना का सारांश संभव नहीं है तो ऐसा पक्षकार ऐसे कारणों का एक विवरण निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत कर सकता है कि सारांशीकरण क्यों संभव नहीं है ।

(3) उप-नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि गोपनीयता का अनुरोध अपेक्षित नहीं है या सूचना प्रदाता उक्त सूचना को सार्वजनिक करने अथवा सामान्यीकृत रूप में या सारांश रूप में उसके प्रकटन को प्राधिकृत करने का इच्छुक नहीं है तो वह ऐसी सूचना की अनदेखी कर सकते हैं ।

19. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता के दावों की जांच की है । प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय रूपांतरण वाली सार्वजनिक फाइल निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई है । प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों की

गोपनीयता के दावों की जांच की है और गोपनीयता के दावे के बारे में संतुष्ट होने के बाद उसकी अनुमति दी गई है। अत्यधिक गोपनीयता के बारे में प्रकटन विवरण पर टिप्पणियों के प्रत्युत्तर में यह उल्लेख किया जाता है कि मात्रा संबंधी समस्त सूचना का प्रकटन समग्र आधार पर किया गया है जबकि कीमत संबंधी सूचना सूचीबद्ध आधार पर प्रदान की गई है। इसी प्रकार घरेलू बिक्री कीमत, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में निर्यातक की सूचना सूचीबद्ध आधार पर प्रदान की गई है। इसके अलावा, क्षति रहित कीमत तथा क्षति मार्जिन को सूचीबद्ध आधार पर प्रदान किया गया है और रेंज का उल्लेख किया गया है। जहां तक संबद्ध देशों के उत्पादकों और निर्यातकों की निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य मासिक आधार पर उपलब्ध कराए जाने के मुद्दे का संबंध है, यह उल्लेख किया जाता है कि पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण प्रतिवादी उत्पादकों और निर्यातकों (सिंगापुर तथा दक्षिण अफ्रीका के) द्वारा प्रदत्त गोपनीय आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि और जांचोत्तर अवधि के लिए किया गया है और इस प्रकार इनका प्रकटन नहीं किया गया है। तथापि, अंतिम जांच परिणाम में जांचोत्तर अवधि के लिए पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन की रेंज उपलब्ध कराई गई है। हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों के उत्तर में प्राधिकारी ने ई यू से संबद्ध वस्तु के निर्यातकों के लिए मासिक आधार पर जांच की गई है और ई यू से तीसरे देशों के लिए मासिक निर्यात कीमत उचित शीर्षों में उपलब्ध कराई गई है।

छ. सामान्य मूल्य और पाटन मार्जिन

छ.1 निर्यातक, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

20. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं -

- i. परिकलित सामान्य मूल्य के प्रयोजनार्थ कच्ची सामग्री तथा उपयोगिता लागत के आबंटन तथा अनुपात की कार्यप्रणाली पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा जांच में कार्यप्रणाली के सुसंगत प्रयोग हेतु समनुरूप होनी चाहिए।
- ii. जांच अवधि के लिए परिकलित सामान्य मूल्य के साथ एच ओ सी एल के पत्र में उल्लिखित उत्पादन लागत की तुलना से भारी अंतर का पता चलता है जो घरेलू उद्योग की वह लागत या दर नहीं है जिसका प्रयोग परिकलित लागत में किया गया है। अतः उचित स्रोत और स्पष्टीकरण के बिना ऐसे आंकड़े को स्वीकार नहीं किया जा सकता।
- iii. आयातकों के सभी स्रोतों के लिए समान सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है। बाजारी स्थितियों, कुशलता के स्तरों और विभिन्न आयात स्रोतों में उपयोगिता लागत को ध्यान में रखते हुए कोई समायोजन नहीं किया गया है।

- iv. घरेलू उद्योग द्वारा दक्षिण अफ्रीका से हुए निर्यातों और निर्यातक के आंकड़ों के बीच अंतर है क्योंकि निर्यातक ही दक्षिण अफ्रीका में संबद्ध वस्तु का एकमात्र ज्ञात उत्पादक है ।
- v. सामान्य मूल्य काफी बढ़ाचढ़ा कर दिखाया गया है । उस आधार का प्रकटन नहीं किया गया है जिसे सी एन वी की गणना में बेंजीन और एल पी जी कीमतों पर विचार करते समय अपनाया गया है ।
- vi. एच ओ सी एल की वार्षिक रिपोर्ट में प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार सामान्य मूल्य की गणना से पाटन मार्जिन यूरोपीय संघ और सिंगापुर के लिए नकारात्मक प्रदर्शित होता है और यह दक्षिण अफ्रीका के लिए 2 प्रतिशत से कम है ।

छ.2 घरेलू उद्योग के विचार

21. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- i. आवेदक द्वारा माह दर माह आधार पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत की तुलना करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है क्योंकि कच्ची सामग्री की कीमत में भारी अंतर रहा है जिससे उत्पाद की संबद्ध लागत और कीमत में भारी अंतर आ गया होगा ।
- ii. तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत तब तक सामान्य मूल्य का आधार नहीं बन सकती जब तक कि इस बात की पुष्टि न की जाए कि ऐसी निर्यात कीमत व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में है ।
- iii. यदि तीसरे देश की कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य कम रहता है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या लागत (अर्थात् उत्पादन लागत से अधिक) के कारण ऐसे तीसरे देश की कीमत व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में है ।
- iv. याचिकाकर्ता ने कुछ देश के संबंध में चुनिंदा ढंग से सूचना प्रदान की है ताकि कोई पाटन प्रदर्शित न हो सके ।
- v. भारत को हुए निर्यातों के संबंध में विचारित मात्रा निर्यातक देश के व्यापार आंकड़ों में सूचित मात्रा से मेल नहीं खाती है । स्पष्ट तौर पर जिस अवधि के लिए सामान्य मूल्य हेतु सूचना पर विचार किया गया है, वह उस अवधि से भिन्न है जिसके लिए निर्यात कीमत हेतु सूचना पर विचार किया गया है ।

- vi. पाटन मार्जिन का निर्धारण मासिक आधार पर किया जाना चाहिए क्योंकि कच्ची सामग्री की कीमत में माह दर माह आधार पर भारी परिवर्तन हुआ है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

22. 9 (1)(ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है

- (i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में सामान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उपनियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा

- (ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा :-

- (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा

- (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

23. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच की है और इसकी जांच के बाद सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है । आगे यह नोट किया जाता है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण संबद्ध देशों के सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा दायर उत्तरों के आधार पर इन उत्पादकों की संबद्ध वस्तु की घरेलू कीमत और उनकी उत्पादन लागत को हिसाब में लेने के बाद किया गया है । निर्यात कीमत का निर्धारण समायोजनों के बिना किया गया है जिसका प्राधिकारी ने सत्यापन किया है । चूंकि जांच के दौरान यूरोपीय संघ के किसी उत्पादक और निर्यातक ने कोई सहयोग नहीं किया है, इसलिए सामान्य मूल्य का परिकलन उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के अनुसार प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत तथा अन्य लागत को ध्यान में रखते हुए एवं 5 प्रतिशत लाभ मार्जिन जोड़कर किया गया है । यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त सौदेवार आंकड़ों से लिए गए आंकड़ों और याचिकाकर्ता द्वारा यू एन कॉम ट्रेड से उपलब्ध कराए गए आंकड़ों तथा

जांच अवधि एवं जांचोत्तर अवधि के आंकड़ों का विश्लेषण किया है। यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी। यह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों के उत्पादकों और निर्यातकों की निर्यात मात्रा को जांच अवधि एवं जांचोत्तर अवधि हेतु सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के प्रयोजनार्थ हिसाब में लिया गया है। इन महीनों के दौरान शून्य निर्यात होने के कारण जहां निर्यातक के आंकड़ों में अंतर पाया गया है, वहां डी जी सी आई एस की सूचना का प्रयोग किया गया है। जांचोत्तर अवधि के लिए भी प्राधिकारी ने उत्पादकों तथा निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना, डी जी सी आई एस के आंकड़ों और यू एन कांट्रेड से उपलब्ध आंकड़ों को उपलब्ध सीमा तक हिसाब में लिया है।

24. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के सभी ज्ञात उत्पादकों और निर्यातकों से यह कहा था कि वे निर्यातक प्रश्नावली के प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रस्तुत करें। इसके उत्तर में निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली प्रस्तुत की है और प्राधिकारी से प्रश्नावली के उनके उत्तर के आधार पर पाटन मार्जिन के निर्धारण को आधारित करने का अनुरोध किया है।

- क. मैरीसोल आर एस ए पी टी वाई, दक्षिण अफ्रीका
- ख. मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर, पी टी ई लि., सिंगापुर (एम पी एस)
- ग. मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेटिफिक) पी टी ई लि. (एम ए पी)
- घ. मै. पेट्रोकेम मिडिल-ईस्ट (एफ जैड ई), दुबई

सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिवादी निर्यातकों के लिए अपनाई गई सामान्य कार्य प्रणाली

25. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की कीमतों में उतार-चढ़ाव रहा था। अतः प्राधिकारी ने पाटन के निर्धारण हेतु समूचे आंकड़ों का माहवार विश्लेषण किया है। माहवार विश्लेषण करने के लिए सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों से आवश्यक आंकड़े मांगे गए थे और सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत ऐसे आंकड़ों के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण मासिक आधार पर किया गया है।

26. प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर और नियमानुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। सर्वप्रथम यह देखा गया था कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा उनके घरेलू बाजारों में संबद्ध वस्तु की घरेलू कीमत उनकी घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिनिधिक तथा व्यवहार्य थी और क्या क्या ऐसी घरेलू बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच पर खरी उतरती है।

प्रतिवादियों ने अपने उत्तरों में अपने घरेलू बाजारों में की गई बिक्री के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। संबद्ध वस्तु की भारित औसत घरेलू कीमत का पृथक निर्धारण करने के लिए इस प्रकार से प्रदत्त सूचना पर भरोसा किया गया है। व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच के निर्धारण हेतु संबद्ध उत्पाद की उत्पादन लागत जैसी कि मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापित की गई है, को स्वीकार किया गया है। इसके अलावा समस्त घरेलू बिक्री सौदों की जांच संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के संदर्भ में की गई थी ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या घरेलू बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई थी। यह भी देखा गया था कि क्या घाटे पर किए गए सौदों का हिस्सा बिक्री के 20 प्रतिशत से अधिक बनता है या नहीं। जहां लाभकारी घरेलू बिक्री सौदे कुल बिक्री के 80 प्रतिशत से अधिक पाए गए थे, वहां घरेलू बिक्री की भारित औसत कीमत पर विचार किया गया है। जहां लाभकारी बिक्री मात्रा 80 प्रतिशत से कम पाई गई थी, वहां लाभकारी घरेलू बिक्री की भारित औसत कीमत को ध्यान में रखा गया है।

सिंगापुर के उत्पादकों और निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण

च.1 मै. एम पी एस के लिए सिंगापुर में सामान्य मूल्य

27. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सिंगापुर की मै. मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पी टी ई लि (एम पी एस) और मै. मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेसिफिक) पी टी ई लि. (एम ए पी) ने प्राधिकारी को उत्तर दिया है और निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है। कार्रवाई के दौरान प्रस्तुत अतिरिक्त सूचना के साथ-साथ उनके उत्तर की जांच की गई थी और यह नोट किया गया था कि संबद्ध उत्पाद का उत्पादन कंपनी मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पी टी ई लि (एम पी एस) द्वारा किया जाता है। आगे यह नोट किया गया था कि क्यूमेन के उत्पादन हेतु उत्पादन प्रक्रिया के संबंध में बेंजीन और प्रापेलीन की खरीद घरेलू और आयातित स्रोतों से की जाती है। क्यूमेन से कंपनी फेनोल और एसीटोन का उत्पादन करती है। सत्यापन के दौरान यह नोट किया गया था कि इस कंपनी द्वारा घरेलू बिक्री डी ए एस को छोड़कर जहां बिक्री एम ए पी के जरिए की जाती है, घरेलू ग्राहकों को सीधे की जाती हैं। यह स्पष्ट किया गया था कि कुछ बिक्रियां (***)% से कम) ऐतिहासिक कारणों से एम ए पी के जरिए की जा रही हैं क्योंकि कुछ ग्राहक सबसे पहले उनसे संपर्क करते हैं। तथापि, (***)% से अधिक की बिक्री सिंगापुर में ग्राहकों को सीधे की गई थी। इसके अलावा, यह नोट किया गया था कि एम ए पी के जरिए घरेलू या निर्यात सभी बिक्रियां जलयान के जरिए बल्क आधार पर की गई थीं और कोई ड्रम बिक्री शामिल नहीं थी।

28. आगे यह नोट किया गया था कि मै. एम ए पी एक व्यापारी है और वह अपनी संबद्ध कंपनी मै. मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर, पी टी ई लि. (एम पी एस) से और अन्य स्रोतों से भी संबद्ध वस्तु की खरीद कर रही है। तथापि जांच अवधि के दौरान उसने भारत को उस संबद्ध

वस्तु की बिक्री की थी जिसकी खरीद केवल एम पी एस से की गई थी । वस्तुतः एम ए पी द्वारा भारत को किए गए पोतलदानों के साथ सिंगापुर के मूल का प्रमाण-पत्र संलग्न था । यह भी नोट किया गया था कि कंपनी घरेलू बाजार में भी संबद्ध वस्तु की बिक्री कर रही है जिसकी खरीद उसने अपनी संबद्ध कंपनी मै. एम पी एस से की थी ।

29. आगे यह नोट किया गया था कि सहयोगी उत्पादक मै. एम पी एस, सिंगापुर और संबद्ध व्यापारी मै. एम ए पी, सिंगापुर द्वारा जांच अवधि के दौरान पेट्रोकेम मिडिल ईस्ट एफ जैड ई, दुबई के जरिए संबद्ध वस्तु के *** सौदे का निर्यात किया जा रहा था । कंपनी द्वारा परिशिष्ट-II में प्रस्तुत सूचना का दौरे के दौरान सत्यापन किया गया था । कंपनी ने यह स्पष्ट किया कि उसने संबद्ध वस्तु के एक परेषण की खरीद मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसेफिक) पी टी ई लि. (एम ए पी) से की है । इस परेषण का विनिर्माण मित्सुई फेनोल, सिंगापुर पी टी ई लि. (एम पी एस) द्वारा किया गया था । जांच अवधि के दौरान कंपनी द्वारा भारत को निर्यातित फेनोल की अकेली खेप की कुल मात्रा *** मी.टन थी । चूंकि पेट्रोकेम मिडिल ईस्ट एफ जैड ई एक व्यापार कंपनी है, इसलिए कंपनी द्वारा प्रस्तुत बिक्री आंकड़ों और एस जी ए व्यय का सत्यापन मूल दस्तावेजों तथा कंप्यूटरीकृत लेखा प्रणाली से किया गया था ।

30. कंपनी द्वारा दायर उत्तर की जांच की गई थी । प्रश्नावलियों के उत्तर से यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने संबद्ध वस्तु हेतु माहवार लागत दी है । एस जी ए व्यय का दावा कारोबार के आधार पर किया गया है । यह नोट किया जाता है कि घरेलू बिक्री पर्याप्तता की जांच पर खरी उतरती हैं । उत्तर के परिशिष्ट-8 ख में यथाउल्लिखित संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत को व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करने के प्रयोजनार्थ मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापित रूप में स्वीकार किया गया है । मौके पर सत्यापन के दौरान नोट और सत्यापित किए गए अनुसार उसके समायोजनों की अनुमति दी गई है । ऐसे निर्धारण के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना मासिक आधार पर की गई है ।

दक्षिण अफ्रीका में सामान्य मूल्य

31. यह नोट किया गया था कि संबद्ध वस्तु का विनिर्माण सासोल वर्ग में किया जाता है जहां मेरीसोल की विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन हेतु सुविधा है । इस सुविधा में सासोल मेरीसोल की संबद्ध कंपनी है जो निविष्टि एवं विचाराधीन उत्पाद, दोनों के संबंध में संभार तंत्र का प्रबंधन करती है । यह नोट किया गया था कि संबद्ध उत्पाद के विनिर्माण में प्रयुक्त प्रमुख कच्ची सामग्री एल एन ओ डी टी ए (लाइट न्यूट्रल ऑयल डिपिचर्ड एसिड) है । यह नोट किया गया था घरेलू बाजार में बिक्री और अन्य देशों को निर्यात हेतु भारत को हुए निर्यातों के लिए कारखाना कीमत में कोई अंतर नहीं है । मेरीसोल-आरएसए अपनी प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् डिपिचर्ड टार एसिड्स (डी टी ए) की प्राप्ति सेकंडा से करती है । डी टी ए का शोधन दो

प्रक्रियाओं अर्थात् *** और *** के प्रयोग से किया जाता है के। इन शोधन चरणों के बाद *** नामक मध्यवर्ती उत्पाद फेनोल के उत्पादन हेतु निधारण प्रक्रिया में भेज दिया जाता है।

32. यह नोट किया गया था कि कंपनी ने परिशिष्ट-1 में *** सौदों की सूचना घरेलू बिक्री के रूप में और *** सौदों की सूचना रिबेटों के रूप में दी है। कंपनी ने घरेलू बाजार में *** मी.ट. संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़े, बीमा और ऋण व्यय के लिए समायोजनों का दावा किया है जिसकी सत्यापन के बाद अनुमति प्रदान की गई है। निकाले गए सामान्य मूल्य का उल्लेख पाटन मार्जिन दर्शाने वाली तालिका में किया गया है। कंपनी द्वारा दायर उत्तर की जांच माहवार आंकड़ों के साथ की गई थी। यह नोट किया जाता है कि घरेलू बिक्री पर्याप्तता की जांच पर खरी उतरती है। उत्तर के परिशिष्ट-8 ख में यथाउल्लिखित संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत को व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करने के प्रयोजनार्थ मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापित रूप में स्वीकार किया गया है। मौके पर सत्यापन के दौरान नोट और सत्यापित किए गए अनुसार उसके समायोजनों की अनुमति दी गई है। ऐसे निर्धारण के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना मासिक आधार पर की गई है।

यूरोपीय संघ में अन्य अप्रतिवादी उत्पादकों तथा निर्यातकों तथा सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

33. चूंकि ई यू से संबद्ध वस्तु के किसी उत्पादक/निर्यातक से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के अनुसार ई यू में सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। आंकड़ों का मिलान आवेदक द्वारा प्रदत्त सूचना, डी जी सी आई एस एवं अन्य स्रोतों से प्राप्त सौदेवार सूचना के साथ किया गया है।

प्रतिवादी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु सामान्य कार्यप्रणाली

34. प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर उनके संबंध में निर्यात कीमत की जांच की है। निर्यात कीमत और उसके समायोजनों की अनुमति मौके पर सत्यापन के दौरान नोट किए गए अनुसार जांच के बाद प्रदान की गई है।

संबद्ध देशों के लिए निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

भारत को एम ए पी के जरिए एम पी एस, सिंगापुर के लिए निर्यात कीमत

35. यह नोट किया जाता है कि मै. एम ए पी एक व्यापारी है और वह अपनी संबद्ध कंपनी मै. मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर, पी टी ई लि. (एम पी एस) से और अन्य स्रोतों से भी संबद्ध वस्तु की खरीद कर रही है। तथापि जांच अवधि के दौरान उसने भारत को उस संबद्ध वस्तु की बिक्री की थी जिसकी खरीद केवल एम पी एस से की गई थी। वस्तुतः एम ए पी द्वारा भारत

को किए गए पोटलदानों के साथ सिंगापुर के मूल का प्रमाण-पत्र संलग्न था । यह भी अनुरोध किया गया था कि कंपनी घरेलू बाजार में भी संबद्ध वस्तु की बिक्री कर रही है जिसकी खरीद उसने अपनी संबद्ध कंपनी मै. एम पी एस से की थी ।

36. यह नोट किया गया था कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान अप्रैल, 2010 और अक्टूबर, 2010 के महीनों में भारत को संबद्ध वस्तु के निर्यातों के 3 सौदे किए हैं । यह भी नोट किया गया था कि *** सौदा एक अन्य व्यापारी मै. पैट्रोकेम मिडिल ईस्ट एफ जैड ई, दुबई के जरिए किया गया है । यह नोट किया जाता है कि मै. पैट्रोकेम मिडिल ईस्ट एफ जैड ई, दुबई ने इस जांच में सहयोग किया है और उसने एम ए पी से खरीदी गई संबद्ध वस्तु (और जिसका उत्पादन एम ए एस ने किया था) के बारे में भारत के लिए अपनी निर्यात कीमत प्रस्तुत की है । एम ए पी के जरिए भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तु के लिए मै. एम पी एस हेतु कारखाना कीमत निर्धारित करने के लिए एम. ए पी के व्यय में समायोजनों को ध्यान में रखा गया है । पाटन मार्जिन का निर्धारण कारखाना स्तर पर उनके संबंधित सामान्य मूल्य के साथ माहवार निर्यात कीमत की तुलना करने के बाद किया गया है ।

एम ए पी और मै. पैट्रोकेम मिडिल ईस्ट (एफ जैड ई), दुबई के जरिए भारत हेतु एम पी एस के लिए निर्यात कीमत

37. यह नोट किया जाता है कि यह कंपनी प्राथमिक रूप से रसायनों और पैट्रोसायनों की व्यापक रेंज के व्यापार में संलग्न है । कंपनी की दुबई इकाई संबद्ध वस्तु का व्यापार करती है क। यह नोट किया गया था कि जांच अवधि के दौरान सहयोगी उत्पादक मै. एम पी एस, सिंगापुर और संबद्ध व्यापारी मै. एम ए पी, सिंगापुर से निर्यातित संबद्ध वस्तु एक सौदा हुआ है । कंपनी का परिशिष्ट-II में प्रस्तुत सूचना का दौरे के समय सत्यापन किया गया था । कंपनी ने यह स्पष्ट किया कि उसने संबद्ध वस्तु के एक परेषण की खरीद मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेसिफिक) पी टी ई लि. (एम ए पी) से की है । इस परेषण का विनिर्माण मित्सुई फेनोल, सिंगापुर पी टी ई लि. (एम पी एस) द्वारा किया गया था । जांच अवधि के दौरान कंपनी द्वारा भारत को निर्यातित फेनोल की अकेली खेप की कुल मात्रा *** मी.टन थी । चूंकि पैट्रोकेम मिडिल ईस्ट एफ जैड ई एक व्यापार कंपनी है, इसलिए कंपनी द्वारा प्रस्तुत बिक्री आंकड़ों और एस जी ए व्यय का सत्यापन मूल दस्तावेजों से किया गया था । एम ए पी और एफ जैड ई के जरिए भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तु के लिए मै. एम पी एस हेतु कारखाना कीमत निर्धारित करने के लिए एफ जैड ई और एम ए पी के व्यय में समायोजनों को ध्यान में रखा गया है । पाटन मार्जिन का निर्धारण कारखाना स्तर पर उनके संबंधित सामान्य मूल्य के साथ माहवार निर्यात कीमत की तुलना करने के बाद किया गया है ।

मैरीसोल, दक्षिण अफ्रीका के लिए निर्यात कीमत

38. यह नोट किया गया था कि परिशिष्ट-2 में निर्यात बिक्री के रूप में कंपनी ने *** सौदों की सूचना दी है। कंपनी ने निर्यात बाजार में *** मी.ट. संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। एजेंट कमीशन, अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, निकासी और हैंडलिंग एवं ऋण व्यय तथा बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया गया था जिसकी अनुमति उनके सत्यापन के बाद प्रदान की गई है। निकाली गई निवल निर्यात कीमत का उल्लेख पाटन मार्जिन दर्शाने वाली तालिका में किया गया है। पाटन मार्जिन का निर्धारण कारखाना स्तर पर उनके संबंधित सामान्य मूल्य के लिए माहवार निर्यात कीमत की तुलना द्वारा किया गया है। तत्पश्चात सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है।

सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका के असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण

39. चूंकि सिंगापुर से संबद्ध वस्तु के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक से कोई अन्य उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। आंकड़ों का मिलान आवेदक, सहयोग निर्यातकों और घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना से किया गया है। दक्षिण अफ्रीका के शेष उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन के बारे में यह नोट किया जाता है कि सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के अलावा प्राधिकारी के पास रिकॉर्ड में संबद्ध वस्तु का कोई दूसरा उत्पादक नहीं है। इसके मद्देनजर दक्षिण अफ्रीका के शेष उत्पादकों और निर्यातकों के लिए वही पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है।

ई यू के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

40. चूंकि ई यू से संबद्ध वस्तु के किसी उत्पादक/निर्यातक से कोई अन्य उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। आंकड़ों का मिलान आवेदक द्वारा प्रदत्त सूचना और डी सी सी आई एस से प्राप्त सौदेवार आयात सूचना से किया गया है।

जांच अवधि के लिए पाटन मार्जिन

41. ऊपर यथानिर्धारित माहवार सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :

क्र.सं.	देश	उत्पादक	निर्यातक	पाटन मार्जिन अम.डॉ./मी.ट.	पाटन मार्जिन %
1	दक्षिण अफ्रीका	मेरीसोल आरएसए पीटीवाई, दक्षिण अफ्रीका	मेरीसोल आरएसए पीटीवाई, दक्षिण अफ्रीका	***	10-15
		अन्य	अन्य	***	10-15
3.	सिंगापुर	मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पीटीई लि., सिंगापुर (एम पी एस)	मित्सुई एंड कं. (एशिया पेंसिफिक) पी टी ई लि. (एम ए पी) .	(***)	(10-15)
4.		मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पीटीई लि., सिंगापुर (एम पी एस)	मै. एमएपी तथा मै. पेट्रोकेम मिडल-ईस्ट (एफजैडई), दुबई		
5.		अन्य उत्पादक तथा निर्यातक	अन्य उत्पादक तथा निर्यातक	***	0-5
6.	यूरोपीय संघ	सभी उत्पादक	सभी निर्यातक	***	0-5%

ज. क्षति निर्धारण और क्षति एवं कारणात्मक संबंध की जांच हेतु कार्य प्रणाली

ज.1 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

42. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :

- डी जी ए डी से वर्तमान मामले की जांच अवधि के दौरान मौजूद क्षति कारकों की तुलना पूर्ववर्ती जांच के समय मौजूद क्षति कारकों के साथ करने की अपेक्षा की जाती है ।
- घरेलू उद्योग का निष्पादन अत्यंत बेहतर रहा है जबकि उसी समय आयात कीमतों में लगातार वृद्धि हो रही है ।
- एच ओ सी एल द्वारा प्रस्तुत जांचोत्तर अवधि की सूचना पर विचार करते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति (ति. 3 2011-12 में), यदि कोई हो, स्वतः स्फूर्त है घ आयातों की पहुंच कीमत 84330 रुपए /मी.ट. थी जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत 79975 रुपए/मी.ट. थी

जिससे स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि आयातों के कारण कंपनी अपनी कीमत घटाने के लिए बाध्य नहीं हुई है ।

- iv. घरेलू उद्योग की लागत और कीमत वर्ष 2011-12 की ति.3 हेतु आयातों की पहुंच कीमत से कम है । ऐसा इसलिए किया गया है ताकि घरेलू उद्योग को नुकसान दर्शाया जा सके और सकारात्मक कीमत कटौती प्रदर्शित की जा सके ।
- v. सूचीबद्ध स्वरूप में प्रदर्शित बिक्री कीमत एच ओ सी एल द्वारा प्रदत्त बिक्री कीमत की तुलना में काफी कम है ।
- vi. संपत्र की गई दो मध्यावधि समीक्षा जांचों में यह माना गया था कि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से अधिक है । अतः यह मानना उचित है कि वर्तमान मामले में भी घरेलू उद्योग क्षति रहित कीमत से अधिक कमा रहा है । एच ओ सी एल के पत्र से भी इस मत को बल मिलता है ।
- vii. वर्तमान अवधि में कोई कीमत हास और कीमत कटौती मौजूद नहीं है ।
- viii. संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण क्षति जारी रहने का कोई साक्ष्य नहीं है ।
- ix. कम कीमत पर बिक्री : क्षति रहित कीमत की अनुमानित गणना (स्रोत : वार्षिक रिपोर्ट) 69, 032 रुपए/मी.ट. से अधिक नहीं होनी चाहिए । इस संबंध में एक्रेलिक फाइबर के मामले का हवाला दिया गया है जिसमें सेस्टेट ने यह माना था कि इन्हीं आंकड़ों के आधार पर घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति होने की संभावना नहीं है ।
- x. कीमत कटौती : दस्तावेजों पर दर्शायी गई कीमत कटौती अधिक घरेलू बिक्री प्राप्ति के कारण हो सकती है । घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से अधिक नहीं थी अपितु, यह अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमतों से अधिक थी ।
- xi. कीमत हास : जहां क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत, दोनों में वृद्धि हुई है, वहीं बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि की तुलना में काफी अधिक हुई थी ।
- xii. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी वृद्धि हुई है । इसके अलावा, प्रपत्र-IV क में प्रदत्त बिक्री कीमत गलत प्रतीत होती है क्योंकि वार्षिक

रिपोर्ट से संगणित बिक्री कीमत से यह पता चलता है कि यह 94,533 रुपए/मी.ट. से कम नहीं हो सकती है ।

- xiii. बाजारी सूचना के अनुसार घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान रखरखाव हेतु लगभग 60-70 दिनों का नुकसान किया है । संयंत्र बंदी चाहे वह सामान्य हो या असामान्य, के कारणों की जांच करने की जरूरत है और इस प्रकार से बंद होने के प्रभावों को क्षति मापदंडों से अलग रखा जाना चाहिए ।
- xiv. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मूल्य ह्रास की राशि में 625 बिन्दु की भारी वृद्धि हुई है जबकि संयंत्र क्षमता समान रही है । प्राधिकारी को वित्तीय रिकॉर्डों या लागत रिकॉर्ड संबंधी नियमों से मूल्य ह्रास के आबंटन या अनुपात के आधार का सत्यापन करना चाहिए ।
- xv. निर्दिष्ट प्राधिकारी को एस आई ग्रुप के क्षति संबंधी आंकड़ों की मांग करनी चाहिए ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति और उसके खतरे का निर्धारण किया जा सके । किसी भी स्थिति में एच ओ सी एल के क्षति संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है । इसके अलावा, पाटन की किसी संभावना के लिए आयातों की समाप्ति की जरूरत प्रतीत नहीं होती है ।
- xvi. जांच अवधि और जांच अवधि से पूर्व की अवधि के दौरान भी दक्षिण अफ्रीका से आयातों की मात्रा काफी कम रही है ।
- xvii. घरेलू उद्योग ने मांग की गणना करते समय एस आई के बिक्री आंकड़ों को शामिल नहीं किया है । एस आई ग्रुप के बिक्री आंकड़ों को अलग रखकर घरेलू उद्योग घरेलू उत्पादकों के बाजार हिस्से को कम करने में समर्थ हो गया है ।
- xviii. घरेलू बिक्री, क्षमता उपयोग, बिक्री कीमत, लाभ आदि से पर्याप्त सुधार का पता चलता है ।
- xix. फेनोल की मध्यावधि समीक्षा (ताईवान और यू एस ए) हेतु अंतिम जांच परिणाम में एच ओ सी एल के लिए वर्ष 2010 (जनवरी-दिसंबर) के लिए क्षति रहित कीमत निर्धारित की गई थी । उसके बाद इस क्षति रहित कीमत की तुलना यू एस ए के लिए संगणित क्षति मार्जिन के साथ की गई थी । यू एस ए के लिए सामान्य मूल्य की जानकारी है । अतः क्षति रहित कीमत की रेंज की गणना की जा सकती है । विश्लेषण से यह पता चलता है कि क्षति रहित कीमत अभी

भी घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम है । तदनुसार यह गणना भी की जा सकती है कि कम कीमत पर बिक्री नकारात्मक है ।

- xx. क्षति अवधि के दौरान क्षमता में कोई विस्तार न होने के बावजूद आधार वर्ष की तुलना में क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के मूल्य ह्रास में आश्चर्यजनक ढंग से वृद्धि हुई है ।
- xxi. घरेलू उद्योग का यह दावा कि कंपनी के मूल संयंत्र का उसकी लेखा बहियों के अनुसार पूर्ण मूल्यह्रास किया गया है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित सिद्धांतों के प्रतिकूल है । घरेलू उद्योग परिसंपत्तियों के "बाजार मूल्य" के अनुसार मूल्यह्रास का दावा नहीं कर सकता और इसे कंपनी द्वारा रखी गई पुस्तिकाओं के अनुसार मूल्य के अनुरूप किया जाना चाहिए ।
- xxii. बिक्री कीमत और उत्पादन लागत की तुलना जांचोत्तर अवधि, वर्ष 2010-11 की ति.3 हेतु घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त पहुंच मूल्य के साथ किए जाने पर नकारात्मक कीमत कटौती का पता चलता है । इसी समय घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत उस उत्पादन लागत से भी कम रही है जब पहुंच मूल्य जांच अवधि के बाद की दूसरी तिमाही के लिए लागत से अधिक रहा है ।
- xxiii. वर्ष 2008 के दौरान विद्यमान स्थिति निर्णायक समीक्षा जांच के समय विद्यमान स्थिति से पूर्णतः भिन्न रही है ।
- xxiv. डी जी ए डी ने पहले ही यह निष्कर्ष निकाला है कि यू एस ए से 75.9 रुपए/मी.ट. के हुए आयातों के कारण कोई क्षति नहीं हो रही है और ने ही उससे घरेलू उद्योग को भविष्य में क्षति होने की संभावना है तो इस बात की आशंका नहीं है कि उन संबद्ध देशों, जिनकी कीमतें यू एस ए की पहुंच कीमत से अधिक हैं, से हो रहे आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति होगी ।
- xxv. एच ओ सी एल की सूचना से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति स्वतः स्फूर्त है । वर्ष 2011-12 की ति.3 के दौरान आयातों का पहुंच मूल्य 84330 रुपए/मी.ट. रहा था जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत केवल 79975 रुपए/मी.ट. ही रही थी ।
- xxvi. वर्ष 2011-12 की ति.3 के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत उसकी उत्पादन लागत से कम रही है जो दोनों ही आयातों के पहुंच मूल्य से कम रही हैं ।

- xxvii. यू एस ए और ताईवान और कोरिया से हुए आयातों के बारे में मध्यावधि समीक्षा जांच में डी जी ए डी ने यह माना था कि जनवरी, 2010-जून, 2011 के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति उसकी क्षति रहित कीमत से लगातार अधिक रही है । वर्तमान जांच में जांच अवधि अप्रैल, 2010 से जून, 2011 की है । अतः यह अनुमान लगाना उचित है कि वर्तमान मामले में भी घरेलू उद्योग अपनी क्षति रहित कीमत से अधिक प्राप्त कर रहा है ।
- xxviii. जांचोत्तर अवधि के विश्लेषण हेतु अवधि को सीमित करने की जरूरत है ।
- xxix. सिंगापुर से किसी भारी मात्रा में आयात नहीं हुआ है । आयात मात्रा में गिरावट आई है और इसी के साथ-साथ ई यू तथा दक्षिण अफ्रीका से आयात कीमत में भारी वृद्धि हुई है ।
- xxx. क्षति रहित कीमत में समायोजन हेतु घरेलू उद्योग के दावे में कोई दम नहीं है । डी जी ए डी ने पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-III के आधार पर क्षति रहित कीमत की गणना की है । इस पद्धति से हटने की वास्तव में कोई जरूरत नहीं है । यदि क्षति रहित कीमत की गणना के बारे में कोई शिकायत है तो उचित समाधान सेस्टेट के समक्ष अपील दायर करने में है ।
- xxxi. दस्तावेज पुस्तिका में उल्लिखित आंकड़े पूर्व में दायर किए गए अनुरोध से पूर्णतः भिन्न हैं ।
- xxxii. घरेलू उद्योग को यह स्पष्ट करना चाहिए कि घरेलू उद्योग ने पूर्ववर्ती वित्त वर्षों में लक्षित या उत्पादित मात्रा को प्रस्तुत क्यों नहीं किया है ।
- xxxiii. निर्दिष्ट प्राधिकारी को क्षमता के कम उपयोग को रेखांकित करने वाले कारकों की तथ्यात्मक जांच किए बिना उसके अपने अधिकारियों द्वारा किए गए तथ्यरहित सत्यापन पर भरोसा करने के बजाए अनुबंध-III में की गई अपेक्षानुसार घरेलू उद्योग के लागत लेखा परीक्षकों द्वारा सत्यापित लागत आंकड़े प्राप्त करने चाहिए ।
- xxxiv. वर्ष 2011-12 के लिए घरेलू उद्योग की वार्षिक रिपोर्ट से अन्य बातों के साथ-साथ यह पाया गया है कि "क्षमता उपयोग में कमी" के परिणामस्वरूप विद्युत और उपयोगिताओं की उसकी खपत अधिक रही है । इस आशय का कोई कारण नहीं बताया गया है कि प्रबंधन ने क्षमता उपयोग को कम करने का निर्णय क्यों लिया है ।

xxxv. घरेलू उद्योग के पास दैनिक आधार पर आवश्यक समझे जाने की स्थिति में बिक्री कीमत को बढ़ाने की क्षमता है। इस छूट की अनुमति भी समेकित नीति के बिना मामला दर मामला आधार पर प्रदान की जाती है और यह अधिकतम छूट होती है, इसलिए हुई क्षति का कारण आयात नहीं है।

xxxvi. घरेलू उद्योग ने पुनरावृत्ति का जोखिम प्रदर्शित करने का भी कोई मामला प्रस्तुत नहीं किया है और इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी इस मामले में जोखिम पुनरावृत्ति का निर्धारण करने का अनुमान नहीं लगा सकते।

xxxvii. घरेलू उद्योग से व्यापक हेराफेरी वाले आंकड़ों की संभावना रही है।

xxxviii. कम कीमत पर बिक्री : क्षति रहित कीमत की अनुमानित गणना (स्रोत: वार्षिक रिपोर्ट) 69, 032 रुपए/मी.ट. से अधिक नहीं होनी चाहिए।

xxxix. कीमत कटौती : कागजों पर कीमत कटौती उच्च घरेलू बिक्री प्राप्ति के कारण हो सकती है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति न केवल क्षति रहित कीमत से अधिक थी अपितु अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमतों से भी ज्यादा थी।

xi. कीमत न्यूनीकरण: जहां संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत, दोनों में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है, वहीं बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि से काफी अधिक रही थी।

xli. बाजारी सूचना के अनुसार जांच अवधि के दौरान रखरखाव के लिए लगभग 60-70 दिन अपेक्षित होते हैं। इस प्रकार संयंत्र बंदी चाहे वह सामान्य हो या असामान्य, के कारणों की जांच करने की जरूरत है और इस प्रकार की बंदी के प्रभावों को क्षति मापदंडों से अलग रखा जाना चाहिए।

ज.2 घरेलू उद्योग के विचार

43. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- i. यह तर्क तथ्यतः गलत है कि उत्पादन और बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है, घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना से उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से में गिरावट और मालसूची में वृद्धि का स्पष्ट तौर पर पता चलता है। लाभ, निवेश पर आय आदि के संबंध में भी घरेलू उद्योग के निष्पादन में 2010 में सुधार हुआ और 2011 में गिरावट आई।

- ii. जहां तक ति.3 में बिक्री कीमत का संबंध है, इस अवधि में आयातों की पहुंच कीमत में इतनी अधिक गिरावट आई जो 71,715 रु./मी.ट. हो गई जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है। बाजार में विभिन्न देशों से हुए आयातों की भरमार थी और इसीलिए घरेलू उद्योग के पास आयात कीमतों के अनुरूप अपनी कीमतें रखने का एकमात्र विकल्प था।
- iii. क्षति रहित कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति के बीच अंतर किसी मध्यावधि समीक्षा जांच में महत्वहीन होता है जैसा कि प्राधिकारी ने कई मामलों में माना है। निर्णायक समीक्षा जांच के विभिन्न मामलों में पाटनरोधी शुल्क की राशि बढ़ाई गई है। जहां क्षति रहित कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से कम थी। वर्तमान मामले में केवल मध्यावधि समीक्षा की जा रही है और इसलिए उद्देश्य नितांत सीमित है।
- iv. मात्र इस तथ्य कि क्षति रहित कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से कम है, का तात्पर्य यह नहीं है कि आयातों से क्षति नहीं हो रही है। क्षति रहित कीमत का उद्देश्य केवल क्षति मार्जिन का निर्धारण करना है।
- v. डिजिटल प्रिंटिंग प्लेट से संबंधित जांचों में इस तथ्य के बावजूद कि यह एक नई जांच थी और घरेलू उद्योग के निष्पादन से किसी "मात्रात्मक क्षति" का पता नहीं चलता था, प्राधिकारी ने यह माना था कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। यद्यपि, इस मामले में कीमत मापदंडों से लगातार सुधार का पता चलता था।
- vi. वर्तमान मामले के तथ्यों से इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि लगाई गई पूंजी पर 22% आय तर्कहीन है क्योंकि सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु विदेशी उत्पादों पर भी उत्पादन लागत पर 5 प्रतिशत लाभ की अनुमति दी जाती है। इस बात पर विचार करना निश्चित तौर पर उचित नहीं है कि घरेलू उद्योग के लिए उचित लाभ उत्पादन लागत पर मामूली 1-2% लाभ होगा। इस प्रकार यदि गणनाओं से कुछ अस्पष्टता आती है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी को उनकी उपयुक्तता पर विचार करना चाहिए।
- vii. आंकड़ों में अंतर या आंकड़ों में परिवर्तन के बारे में हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न अनुरोधों का उत्तर देते हुए घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि प्राधिकारी जांच के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सूचना पर विचार करें।

- viii. कम उत्पादन की वजह विदेशी आपूर्तिकर्ताओं से बाजार में उपलब्ध सस्ती सामग्री के मद्देनजर वस्तु की बिक्री करने में घरेलू उद्योग की अक्षमता है । इस संबंध में बढ़ती हुई माल सूची साक्ष्य है ।
- ix. जांचोत्तर अवधि में क्षति मार्जिन और पाटन मार्जिन नकारात्मक बन गए हैं । इसके अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने फेनोल और एसीटोन की मध्यावधि समीक्षा से संबंधित पूर्ववर्ती जांचों में यह स्वीकार किया है जांच अवधि के लिए भारत औसत अत्यंत भ्रामक है और प्राधिकारी माह-दर-माह तुलना करें ।
- x. क्षति रहित कीमत का निर्धारण सफल अचल परिसंपत्तियों और वह भी वर्तमान बाजार मूल्य पर विचार करते हुए किया जाना अपेक्षित है ।
- xi. जहां तक लाभ/हानि, लगाई गई पूंजी पर आय और नकद प्रवाह का संबंध है, सूचना से स्पष्ट पता चलता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में 2010 के दौरान सुधार हुआ और उसके बाद 2011 में उसमें इतनी अधिक गिरावट आई कि घरेलू उद्योग को अक्टूबर-दिसंबर, 2011 में वित्तीय घाटा हुआ और उसके पश्चात स्थिति खराब हो गई ।
- xii. कीमत कटौती का क्षति रहित कीमत तथा निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना से कोई लेना-देना नहीं है । कीमत कटौती बिक्री कीमत तथा आयात कीमत के बीच अंतर होती है ।
- xiii. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में 2011 में भारी गिरावट आई जैसा कि 2010 और 2011 के बीच माह दर माह और तिमाही दर तिमाही उतार-चढ़ाव से देखा जा सकेगा ।
- xiv. जांच अवधि में संबद्ध देशों से काफी आयात हुए हैं । इसके अलावा, भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में भारी कटौती हुई है ।
- xv. यह मानते हुए परंतु स्वीकार न करते हुए कि घरेलू उद्योग को अब तक क्षति नहीं हो रही है, यह पाटनरोधी शुल्क की समय पूर्व समाप्ति के लिए नितांत अपर्याप्त होगा । मध्यावधि समीक्षा के चरण पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति की मांग करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में "घरेलू उद्योग को क्षति होने की कोई संभावना नहीं" की पुष्टि करनी चाहिए ।

xvi. "क्षति की कोई संभावना नहीं" की पुष्टि करने का दायित्व घरेलू उद्योग का नहीं है । यह दायित्व निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष याचिकाकर्ता है । प्राधिकारी से "जारी रहने के औचित्य" का निर्धारण करने की अपेक्षा नहीं की जाती है । "जारी रहने का औचित्य" समाप्ति के औचित्य" से अलग है ।

xvii. क्षति रहित कीमत में निम्नलिखित व्यय शामिल होने चाहिए :

- क. कारखाने से देश के भीतर विस्तारित भांडागार तक भारतीय भाड़ा
- ख. अंतिम अवधि में मात्रात्मक छूट
- ग. नकद छूट

ज.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

44. प्राधिकारी द्वारा नीचे किए गए क्षति विश्लेषण से हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न अनुरोधों का स्वतः समाधान हो जाता है ।

45. प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों के अनुसार आयात आंकड़ों पर विचार किया है । हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी । संतुष्ट होने के उपरांत प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता प्रदान की है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है । जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं ।

46. जहां तक वर्तमान जांच अवधि के कारकों की तुलना पूर्ववर्ती मामले की जांच अवधि के कारकों के साथ किए जाने का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि कारकों की जांच प्राधिकारी की सुस्थापित पद्धति के आधार पर की जाती है जिन पर पूर्ववर्ती पैराओं में विस्तार से चर्चा की गई है । प्राधिकारी द्वारा संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अधिक होने अर्थात् नकारात्मक कीमत कटौती की जांच इस विवरण के संगत पैराओं में की गई है । जहां तक घरेलू उद्योग को क्षति न होने के मुद्दे का संबंध है, प्राधिकारी ने इसकी जांच इस विवरण के संगत खंड में की है । जहां तक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का संबंध है, निविष्टि लागत और उत्पादन लागत में भारी अंतर के कारण प्राधिकारी ने बिक्री कीमत का विश्लेषण माह-दर-माह आधार पर किया है । जहां तक निवेश के बाजार मूल्य पर विचार करने के अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी ने सुसंगत पद्धति और नियमावली के

अनुबंध-III के अनुसार निवल अचल परिसंपत्तियों के आधार पर लगाई गई पूंजी का निर्धारण किया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों का संगत सीमा तक सत्यापन करने के बाद नियमावली के अनुबंध-III में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुसार क्षति रहित कीमत निर्धारित की है।

47. मांग तथा बाजार हिस्से का निर्धारण

48. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की मांग का निर्धारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री, अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री और समस्त स्रोतों से भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा के रूप में किया है। इस प्रकार निर्धारित मांग निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है। यह देखा जाता है कि देश में संबद्ध वस्तु की मांग में 2008-09 और 2009-10 में गिरावट आने के बाद जांच अवधि में वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	43,723	40,924	37,671	46,889	37,511
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	29,247	31,451	31,958	44,741	35,793
सभी घरेलू उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	72,970	72,375	69,629	91,630	73,304
से आयात						
- संबद्ध देश	मी.ट.	33,352	22,541	10,571	32,232	25,786
- यूरोपीय संघ	मी.ट.	25,263	8,457	1,776	14,933	11,947
- दक्षिण अफ्रीका	मी.ट.	7,058	8,176	8,794	14,176	11,341
- सिंगापुर	मी.ट.	1,031	5,907	1	3,123	2,498
- अन्य देश	मी.ट.	67,070	67,607	89,519	118,266	94,612
कुल आयात	मी.ट.	100,422	90,148	100,090	150,498	120,398
मांग/खपत	मी.ट.	173,392	162,522	169,719	242,128	193,702

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव**आयात मात्रा**

49. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी ने इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
संबद्ध देश	मी.ट.	33,352	22,541	10,571	32,232	25,786
यूरोपीय संघ	मी.ट.	25,263	8,457	1,776	14,933	11,947
दक्षिण अफ्रीका	मी.ट.	7,058	8,176	8,794	14,176	11,341
सिंगापुर	मी.ट.	1,031	5,907	1	3,123	2,498
अन्य देश	मी.ट.	67,070	67,607	89,519	118,266	94,612
कुल आयात	मी.ट.	100,422	90,148	100,090	150,498	120,398

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आयातों में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई थी। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आयातों में वर्ष 2009-10 तक तेजी से गिरावट आई और उसके बाद 2009-10 तक तेजी से गिरावट आई और उसके बाद 2009-10 की तुलना में जांच अवधि के दौरान तेजी से वृद्धि हुई। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि यह वृद्धि उक्त अवधि में लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद हुई है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि अन्य देशों से हुए आयातों में भी वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है।

कीमत प्रभाव

51. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्नानुसार निर्धारित है :

"नियम 18 के उपनियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की जा रही है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक मात्रा में कमी करना है या ऐसी कीमत को रोकना है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।"

52. किसी समीक्षा जांच में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है । अथवा प्रभाव की पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

53. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा गिरावट आई है अथवा होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती । घरेलू बाजार पर आयातों के प्रभाव का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों का विश्लेषण किया । प्राधिकारी ने करों तथा शुल्कों, रिबेटों, छूटों एवं भाड़े तथा ढुलाई को छोड़कर बिक्री कीमत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण किया । आयातों की पहुंच कीमत का निर्धारण 1% उतराई प्रभार तथा लागू मूल सीमाशुल्क और उपकर के साथ भारित औसत सी आई एफ आयात कीमत पर विचार करते हुए किया गया है ।

54. **कीमत कटौती :** यह निर्धारण करने के लिए कि क्या संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हुई थी प्राधिकारी ने निम्नलिखित तालिका में दिए गए ब्यौरे के अनुसार घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति (कारखाना द्वार पर) की तुलना क्षति अवधि के दौरान आयातों की पहुंच कीमत के साथ की है ।

विवरण		2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
पहुंच मूल्य-संबद्ध देश					
यूरोपीय संघ	रु./मी.ट.	67,721	57,391	56,083	84,445
दक्षिण अफ्रीका	रु./मी.ट.	64,555	52,962	48,826	73,308
सिंगापुर	रु./मी.ट.	66,290	51,519	-	80,773
निवल बिक्री कीमत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
निवल बिक्री कीमत	सूचीबद्ध	100	92	92	138
कीमत कटौती					
यूरोपीय संघ	रु./मी.ट.	***	***	***	***
दक्षिण अफ्रीका	रु./मी.ट.	***	***	***	***
सिंगापुर	रु./मी.ट.	***	***	***	***
कीमत कटौती					
यूरोपीय संघ	%	***	***	***	***
दक्षिण अफ्रीका	%	***	***	***	***
सिंगापुर	%	***	***	***	***
कीमत कटौती					
यूरोपीय संघ	रैंज	0-10%	5-15%	10-20%	10-20%
दक्षिण अफ्रीका	रैंज	0-10%	10-20%	20-30%	20-30%
सिंगापुर	रैंज	0-10%	15-25%	-	10-20%

उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि, समूची क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई थी । तथापि, केवल जांच अवधि में बिक्री कीमत में वृद्धि हुई । प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान कीमत में न तो हास और न ही कीमत न्यूनीकरण हुआ था ।

55. कम कीमत पर बिक्री : यह निर्धारण करने के लिए कि क्या संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कम कीमत पर बिक्री हुई है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की माह-वाह क्षति रहित कीमत (कारखाना द्वार पर) की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों की माह-वार पहुंच कीमत के साथ की है । जांच अवधि के दौरान सभी संबद्ध देशों से हुए आयातों के लिए भारत औसत कम कीमत पर बिक्री नकारात्मक रही थी ।

कीमत ह्रास एवं न्यूनीकरण

56. इस बात की जांच करने के लिए कि क्या संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में ह्रास/न्यूनीकरण हो रहा था, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तालिका में दिए गए ब्यौरे के अनुसार घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति (कारखाना द्वार पर) की तुलना क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत के साथ की है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	101	102	126
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.ट.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	92	92	138

उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत और बिक्री कीमत, दोनों में वृद्धि हुई थी। तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि बिक्री लागत में हुई वृद्धि की तुलना में कम रही है। इससे कीमत ह्रास का पता चलता है जिससे घरेलू उद्योग बिक्री लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप बिक्री कीमत प्राप्त नहीं कर सका है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान कोई कीमत न्यूनीकरण नहीं हुआ है।

घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मापदंड

57. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति निर्धारण में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। इसके अलावा नियमावली के अनुबंध-II (iv) में निम्नानुसार प्रावधान है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपयोग, बिक्री

58. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा से संबंधित सूचना निम्नानुसार है :

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
स्थापित क्षमता	मी.ट.	40,000	40,000	40,000	50,000	40,000
उत्पादन	मी.ट.	41,908	42,641	36,751	47,745	38,196
क्षमता उपयोग	%	105	107	92	95	95
घरेलू बिक्री	मी.ट.	43,723	40,924	37,671	46,889	37,511
मांग	मी.ट.	173,392	162,522	169,719	242,128	193,702

59. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2009-10 में भारी गिरावट आई और उसके बाद जांच अवधि में मामूली सुधार हुआ । तथापि, ये आधार वर्ष में प्राप्त स्तरों की तुलना में कम रहे थे । क्षति अवधि के दौरान घरेलू बिक्री में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू बिक्री में भारी गिरावट आई थी । यद्यपि, जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई थी ।

लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह

60. घरेलू उद्योग के लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की जांच निम्नानुसार की गई है :

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	27	26	192	153
लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	29	29	159	159
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	23	24	190	152
लाभ/हानि	रु./मी.ट.	***	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	33	30	214	214

61. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के ब्याज एवं कर पूर्व लाभ (पीबीआईटी), नकद लाभ, प्रति मी.ट. लाभ/हानि तथा निवेश पर आय में वर्ष 2009-10 तक गिरावट आई और उसके बाद आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इनमें तेजी से वृद्धि हुई ।

रोजगार एवं मजदूरी

62. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग एक बहु उत्पाद बहु स्थानीय कंपनी है । घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर पर पाटन का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ सकता है । घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर और मजदूरी की स्थिति निम्नानुसार रही है :

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कर्मचारियों की संख्या	सं.	***	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	94	94	109	109
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	102	105	142	113

63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के रोजगार का स्तर स्थिर रहा है जबकि मजदूरी में वर्ष 2009-10 तक सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है और उसके बाद मजदूरी समाधान लागू होने के कारण उसमें जांच अवधि में तेजी से वृद्धि हुई है ।

उत्पादकता

64. घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नलिखित तालिका में दी गई है :-

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	102	88	84

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान उत्पादन में गिरावट के अनुरूप घरेलू उद्योग की उत्पादकता में तेजी से गिरावट आई है ।

मालसूची

66. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की मालसूची के स्तर की जांच की है जिसे निम्नलिखित तालिका में दिया गया है ।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
आरम्भिक स्टॉक	मी.ट.	2,307	492	2,209	1,289
अंतिम स्टॉक	मी.ट.	492	2,209	1,289	2,137
औसत स्टॉक	मी.ट.	1,399	1,351	1,749	1,713
	सूचीबद्ध	100	97	125	122

प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की औसत मालसूची के स्तर में तेजी से वृद्धि हुई है तथापि, आधार अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान संगत अवधि के अंत में स्टॉक में भारी वृद्धि हुई है ।

वृद्धि

67. घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मापदंडों की जांच करने पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन और बिक्री जैसे मात्रात्मक मापदंडों में नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है; घरेलू उद्योग के विभिन्न कीमत मापदंडों में समग्र आधार पर सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है ।

पूंजी जुटाने की क्षमता

68. घरेलू उद्योग एक बहु उत्पाद कंपनी है । आगे निवेश जुटाने की उनकी क्षमता को क्षति प्रदर्शित करने वाला प्रमुख कारक नहीं माना गया है । तथापि, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि यदि वर्तमान स्रोत से पाटन जारी रहता है तो घरेलू उद्योग की पूंजी जुटाने की क्षमता पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ।

छ. अन्य ज्ञात कारक

69. जांच अवधि के दौरान वर्तमान जांच के संबद्ध देशों से आयातों की सूचना दी गई है । तथापि, तीसरे देशों से हुए आयात काफी अधिक मात्रा में हुए हैं । इसके अलावा, अन्य देशों से आयात की सी आई एफ कीमत काफी कम है । हालांकि कुछ तीसरे देशों से हुए आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है तथापि घरेलू उद्योग ने अन्य तीसरे देशों में से ऐसे कुछ देशों से हुए आयातों के संबंध में प्राधिकारी के समक्ष नया आवेदन दायर किया है जिन पर पाटनरोधी शुल्क पहले समाप्त कर दिया गया था ।

मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

70. क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की समग्र मांग में अत्यधिक सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि प्राधिकारी की जानकारी में खपत की पद्धति में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है और न ही किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस बारे में कोई अनुरोध किया है।

विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

71. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है। घरेलू उद्योग एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करता है और साथ ही संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। घरेलू उद्योग की कीमत का निर्धारण संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत द्वारा किया जाता है। इसके अलावा, भारतीय बाजार में अन्य स्रोतों से हुए आयातों की व्यापक मौजूदगी है।

प्रौद्योगिकी विकास और निर्यात निष्पादन

72. जांच से ऐसा कोई साक्ष्य सामने नहीं आया है जिससे यह पता चल सके कि प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई खास परिवर्तन हुआ है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात

73. घरेलू उद्योग के निर्यात की मात्रा काफी कम है। इसके अलावा, वर्तमान क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू तथा निर्यात बाजार में कीमत तथा लाभप्रदता को अलग-अलग रखा है। अतः निर्यात निष्पादन से इस विवरण में प्राधिकारी द्वारा किया गया क्षति विश्लेषण प्रभावित नहीं हुआ है।

ज. क्षति की मात्रा और क्षति निर्धारण

74. क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :

क्र.सं.	देश	उत्पादक	निर्यातक	पाटन मार्जिन अम.डॉ./मी.ट.	पाटन मार्जिन %
1	दक्षिण अफ्रीका	मेरीसोल आरएसए पीटीवाई, दक्षिण अफ्रीका	मेरीसोल आरएसए पीटीवाई, दक्षिण अफ्रीका	***	(3-8)

		अन्य	अन्य	***	(3-8)
3.	सिंगापुर	मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पीटीई लि., सिंगापुर (एम पी एस)	मित्सुई एंड कं. (एशिया पेसिफिक) पी टी ई लि. (एम ए पी) .	(***)	(3-8)
4.		मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पीटीई लि., सिंगापुर (एम पी एस)	मै. एमएपी तथा मै. पेट्रोकेम मिडल-ईस्ट (एफजैडई), दुबई		
5.		अन्य उत्पादक तथा निर्यातक	अन्य उत्पादक तथा निर्यातक	***	(3-8)
6.	यूरोपीय संघ	सभी उत्पादक	सभी निर्यातक	***	(8-13)

झ. मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना

झ.1 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

75. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- डी जी ए डी द्वारा की गई पूर्ववर्ती दो जांचों में (क) जांचोत्तर अवधि में निर्यात मात्रा (ख) जांचोत्तर अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता (ग) जांचोत्तर अवधि में आयातों का पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत और (घ) तीसरे देश से निर्यात पर विचार किया गया था ।
- जांचोत्तर अवधि के आंकड़ों का निर्णय लेते समय जांचोत्तर अवधि को सीमित करने की जरूरत होती है । अन्यथा हितबद्ध पक्षकार हाल की अवधि के लिए सूचना प्रदान करते रहेंगे और प्राधिकारी के लिए समय सीमा के भीतर जांच संपन्न करना मुश्किल हो जाएगा । अतः जांचोत्तर अवधि के रूप में 6 माह की अवधि पर विचार किया जाना चाहिए ।
- सिंगापुर के आयात घटी हुई मात्रा में और उच्च आयात कीमत पर किए जा रहे थे । इसके अलावा, सिंगापुर से जांचोत्तर अवधि में आयात बंद हो गए हैं जिससे पाटन एवं क्षति की कोई संभावना नहीं बनती है ।

- iv. यूरोपीय संघ और दक्षिण अफ्रीका से जांचोत्तर अवधि में आयात मात्रा में गिरावट आई और आयात कीमत में भारी वृद्धि हुई । हाल में संपन्न जांच में डीजीएडी ने 6 माह की जांचोत्तर अवधि हेतु आयातों की तुलना पूर्ववर्ती वर्ष के उन्हीं 6 माह के आयातों के साथ की है । यही नीति अपनाई जानी चाहिए ।
- v. घरेलू उद्योग ने जांच अवधि और जांचोत्तर अवधि की प्रथम तिमाही में भारी लाभ कमाया है । वर्ष 2011-12 की ति.3 में घाटा उसके खुद के कीमत निर्धारण निर्णय के कारण हुआ है ।
- vi. संबद्ध देशों से जांचोत्तर अवधि में आयात कीमत जांच अवधि के दौरान प्रचलित आयात कीमत से काफी अधिक थी ।
- vii. जब यू एस ए से काफी कम कीमत पर हो रहे आयात की कीमत को क्षति पहुंचाने वाली या क्षति पहुंचाने की संभावना वाली नहीं मानी जा सकती जो इससे यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयात कीमत से क्षति नहीं होगी ।
- viii. संबद्ध देशों से तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत की तुलना क्षति रहित कीमत के साथ की जानी चाहिए (जैसा कि पूर्व में किया गया है) और तब यह निर्धारित किया जाना चाहिए कि इस वजह से क्षति होने की संभावना है ।
- ix. सुसंगतता की दृष्टि से प्राधिकारी को वर्तमान मामले में भी पाटन एवं क्षति की संभावना की जांच के वही मानक अपनाने चाहिए जो संबद्ध वस्तु की पूर्ववर्ती दो जांचों में लागू किए गए थे । प्रतिवादी घरेलू उत्पादक (एच ओ सी एल) ने भी सार्वजनिक सुनवाई के दौरान इस बात का स्पष्ट समर्थन किया है कि वर्तमान मामले में भी ऐसे मानकों को लागू करना उपयुक्त होगा ।
- x. जुलाई-दिसंबर, 2011 से आयात मात्रा 16,484 मी.ट. है जो तदनुरूपी पूर्ववर्ती वर्ष में 33,904 मी.ट. थी जिससे जांचोत्तर अवधि में संबद्ध आयातों में गिरावट का स्पष्ट पता चलता है ।
- xi. जांचोत्तर अवधि में घरेलू उद्योग को भारी मुनाफा हुआ था । माह अक्टूबर, 2011 को कम क्षमता उपयोग होने के कारण एक असामान्य माह होने के कारण अलग रखा जाना चाहिए । यदि घरेलू उद्योग ने अक्टूबर, 2011 के दौरान क्षमता उपयोग का वही स्तर बनाए रखा होता जैसा कि जुलाई से सितंबर, 2011 के दौरान रखा गया था तो घरेलू उद्योग ने अक्टूबर, 2011 में उचित लाभ अर्जित किया होता ।

- xii. नवंबर, 2011 के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत 76,485 रु. प्रति मी.ट. रही थी जबकि एचओसीएल की वेबसाइट पर फेनोल की प्रकाशित कीमत सूची से कीमत 90,000 रु./- मी.ट. (बल्क) होने का पता चला था ।
- xiii. जांचोत्तर अवधि के लिए निवल बिक्री प्राप्ति क्षति रहित कीमत से अधिक है ।
- xiv. पाटन की कोई संभावना मौजूद नहीं है और इसलिए मामले के वर्तमान तथ्यों में क्षति की संभावना का प्रश्न नहीं उठता है । यूरोपीय आयोग में यह एक स्थापित परंपरा है कि यदि पाटन की संभावना नहीं है तो क्षति की संभावना का प्रश्न नहीं उठता है ।
- xv. प्राधिकारी को इस बात की जांच करनी चाहिए कि क्या घरेलू उद्योग के लिए "स्पष्ट रूप से प्रत्याशित और आसन्नवर्ती" खतरा विद्यमान है । शुल्क तभी जारी रखा जाना चाहिए जब उत्तर सकारात्मक हो । क्षति अवधि के निष्पादन में पर्याप्त सुधार हुआ है ।
- xvi. एक्रीलिक फाइबर से संबंधित मध्यावधि समीक्षा जांच के अंतिम जांच परिणाम में संभावना का निर्धारण घरेलू उद्योग के सुधरे हुए निष्पादन के आधार पर किया गया है जो इस मामले में भी है । यदि यह तर्क दिया भी जाता है कि यह सुधार शुल्क लागू होने के कारण हुआ है तो यह नोट किया जाना चाहिए कि इसका तात्पर्य केवल यह है कि शुल्क का उद्देश्य पूरा हो गया है और शुल्क को आगे जारी रखे जाने से घरेलू उद्योग का अनुचित रूप से पक्ष लिया जाएगा ।
- xvii. मैट्रोनिडाजोल से संबंधित एस एस आर के अंतिम जांच परिणाम का हवाला दिया जाता है जिसमें यह निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटन से आगे और क्षति होने की संभावना है, जांच अवधि में घरेलू उद्योग के निष्पादन और पाटन मार्जिन पर भरोसा किया गया था ।
- xviii. प्रकटन विवरण के बाद यह नोट किया गया था कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति मौजूद नहीं है या जारी नहीं है । यद्यपि, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मात्रात्मक मापदंडों में से कुछ में गिरावट प्रदर्शित हुई है । आगे यह अनुरोध किया गया है कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु की कीमत के बारे में एकाधिकार सृजित किया है क्योंकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पाटनरोधी शुल्क के कारण क्षति रहित कीमत एवं संबद्ध देशों की पहुंच कीमत से लगभग 20-25 प्रतिशत अधिक है । आगे यह अनुरोध किया गया है कि यूरोपीय संघ

से मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है । यह भी कहा गया है कि प्रकटन विवरण के अनुसार जांचोत्तर अवधि के दौरान ई यू से क्षति मार्जिन नकारात्मक है । इस प्रकार जांचोत्तर अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुई कोई क्षति का संबंध ई यू से हुए आयातों से नहीं है । यह भी अनुरोध किया गया है कि यद्यपि, कीमत कटौती सकारात्मक है, तथापि, ई यू से क्षति मार्जिन नकारात्मक है । जहां तक ई यू से तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु के निर्यात की कीमत का संबंध है, यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में तीसरे देश के लिए ऐसी कीमतों का प्रकटन नहीं किया है जबकि ऐसी कीमतें किसी निर्यातक/उत्पादक या घरेलू उद्योग के हक में आती हैं । उन्होंने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह ई यू से तीसरे देशों को निर्यात हेतु मासिक क्षति मार्जिन न कि वार्षिक आधार पर इसका निर्धारण करें जैसा कि प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में आकलन किया है । माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस बात की पुष्टि करने के लिए कोई जांच नहीं की है कि इस स्वीकृत तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि इस अवधि के दौरान अन्य देशों से आयात की मात्रा में भारी वृद्धि हो रही है, संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग के लाभ, बिक्री कीमत और आय में तथाकथित गिरावट आई है । इसके अलावा, जांचोत्तर अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत, कम कीमत पर बिक्री, कीमत कटौती, आयात आंकड़ों और मात्रा जैसे महत्वपूर्ण मापदंडों के प्रकटन को भी रोक कर रखा गया है । दक्षिण अफ्रीका के निर्यातकों का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी अनुरोध किया है कि तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत का विश्लेषण भी पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन एवं क्षति की संभावना के निर्धारण के संदर्भ में किया जाना चाहिए । सिंगापुर के निर्यातकों का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी अनुरोध किया है कि सिंगापुर से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होने का कोई खतरा नहीं है । प्रकटन विवरण जारी करने का उद्देश्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को इस मामले में उत्पन्न तथ्यों और विधिक मुद्दों की समीक्षा हेतु एक अवसर प्रदान करना और उन पर टिप्पणियां प्रदान करना होता है ताकि वे अपने हितों की कारगर ढंग से रक्षा कर सकें । तथापि, प्राधिकारी ने इस पर टिप्पणियां प्रस्तुत करने के लिए केवल एक कार्य दिवस प्रदान किया है जो पर्याप्त नहीं है । यह अनुरोध किया गया है कि यूरोपीय संघ और सिंगापुर के लिए लागू क्षति रहित कीमत दक्षिण अफ्रीका के लिए लागू क्षति रहित कीमत की तुलना में काफी अधिक है । इस बात की जानकारी नहीं है कि क्या प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए या

प्रत्येक निर्यातक देश या निर्यातक के लिए क्षति रहित कीमत की गणना की है। यह भी अनुरोध किया गया है कि यह साधारण सी बात है कि दक्षिण अफ्रीका भारत से कम कीमतों पर अन्य तीसरे देशों को "विनिर्देशन से इतर" फेनोल की बेहतर मात्रा में निर्यात करता है।

घरेलू उद्योग के विचार

76. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- i. पूर्ववर्ती एम टी आर में संभावना के निर्धारण का तरीका आपत्तिजनक है। तथापि, यदि वही कार्यप्रणाली अपनाई जाती है तो संभावना की पुष्टि हो जाएगी।
- ii. परिवर्तित परिस्थितियों का स्थायी स्वरूप हाल ही की अवधि तक जांचोत्तर अवधि के निष्पादन की जांच की जानी चाहिए।
- iii. ऐसा कोई कानूनी प्रावधान नहीं है कि संभावना की जांच करने के लिए जांच अवधि को सीमित किया जाना चाहिए अथवा जांच अवधि के बाद छः माह पर विचार किया जाना चाहिए। नियमों में पिछले और वर्तमान आंकड़ों पर विचार करने और संभावित भावी घटनाक्रमों के बारे में निष्कर्ष निकालने का स्पष्ट प्रावधान है।
- iv. डब्ल्यू टी ओ न्यायशास्त्र से स्पष्टतः यह पता चलता है कि प्राधिकारी को हाल ही की अवधि तक घरेलू उद्योग के निष्पादन अर्थात् पिछले और वर्तमान निष्पादन पर विचार करना चाहिए।
- v. यह एक सुस्थापित कानूनी राय है कि शुल्क समाप्ति की जरूरत की पुष्टि करने का दायित्व विदेशी उत्पादकों, आयातकों और उपभोक्ताओं पर होता है। घरेलू उद्योग के लिए जांच के क्षेत्र के मद्देनजर शुल्क जारी रखने की जरूरत की पुष्टि करना अपेक्षित नहीं है।
- vi. एस एस आर जांच में संभावना के विश्लेषण के आधार पर नकारात्मक क्षति मार्जिन के बावजूद शुल्क की अवधि बढ़ाई गई थी।
- vii. जब घरेलू उद्योग को एक बार फिर क्षति होनी शुरू हो गई है तो स्पष्टतः इस बात की पुष्टि नहीं की जाती है कि उक्त पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने या परिवर्तित किए जाने पर घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है।

viii. प्रकटन विवरण के बाद घरेलू उद्योग ने क्षति रहित कीमत का पूर्ण प्रकटन करने के लिए कहा है और इसके अभाव में उसने अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने में असमर्थता जताई है। उन्होंने आगे यह अनुरोध किया है कि तीसरे देशों के लिए निर्यातों के संबंध में क्षति मार्जिन तीसरे प्रत्येक संबद्ध देशों के बारे में सकारात्मक है और इस बात की पुष्टि नहीं होती है कि उक्त पाटनरोधी शुल्क समाप्त या परिवर्तित किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है। इसके अलावा, यह अनुरोध किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को मध्यावधि समीक्षा में इस बात की जांच करनी चाहिए कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है और यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है, तभी निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर सकते हैं। आगे यह अनुरोध किया गया है कि रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना से स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि मात्रात्मक मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रतिकूल था जबकि कीमत मापदंडों के संबंध में यह प्रतिकूल नहीं था। उत्पादन, घरेलू बिक्री, मात्रा, क्षमता उपयोग, मालसूची, बाजार हिस्से के बारे में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि घरेलू उद्योग को मात्रात्मक क्षति हुई है। उन्होंने यह भी कहा है कि मात्रा और कीमत संबंधी क्षति के बीच यह आवश्यक नहीं होता है कि दोनों प्रकार की क्षति साथ-साथ होनी चाहिए। हालांकि घरेलू उद्योग पर मात्रात्मक प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है। चूंकि घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव पड़ा है, इसलिए वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त नहीं किया जा सकता।

प्राधिकारी द्वारा जांच

77. प्राधिकारी को किसी मध्यावधि समीक्षा जांच में इस बात का निर्धारण करने के अलावा कि भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु का प्रवेश पाटित कीमतों पर जारी है, यह निर्धारित करना होता है कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु का निर्यात किए जाने की संभावना है। प्राधिकारी के लिए आगे यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क समाप्त या परिवर्तित किए जाने की स्थिति में पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

78. प्राधिकारी ने जांच के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सूचना और साक्ष्य के आधार पर घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच की है।

प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने पूर्व में विभिन्न देशों से संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को समाप्त करने की सिफारिश की थी। प्राधिकारी ने यह माना था कि संबंधित जांच अवधि में घरेलू उद्योग के निष्पादन में अत्यधिक सुधार हुआ है और घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है। तथापि, वर्तमान मामले में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में पुनः गिरावट आनी शुरू हो गई है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने जांचोत्तर अवधि की सूचना का मासिक विश्लेषण कर क्षति एवं पाटन की संभावना की जांच की है। आयातों के बारे में जांचोत्तर अवधि के आंकड़े संबद्ध देशों के सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना सिंगापुर ट्रेड स्टेटिक्स और यू एन कॉम ट्रेड के आंकड़ों से प्राप्त सूचना सहित विभिन्न स्रोतों से घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना से लिए गए हैं।

79. यह नोट किया जाता है कि कई हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि जांचोत्तर अवधि के निष्पादन का विश्लेषण केवल 6 माह तक किया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि ऐसी कोई कानूनी जरूरत नहीं है और इसके विपरीत पिछले तथा वर्तमान तथ्यों पर विचार किए जाने की जरूरत है। प्राधिकारी ने पिछली पद्धति के अनुसार जांचोत्तर अवधि का अपना विश्लेषण जांच अवधि के बाद 6 माह तक सीमित किया है।

80. यह भी नोट किया जाता है कि न तो प्रतिवादी निर्यातकों और न ही अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने संबद्ध देशों द्वारा तीसरे देशों को किए गए निर्यातों जैसे सकारात्मक साक्ष्य के साथ इस बात की पुष्टि नहीं की है कि पाटन और घरेलू उद्योग के परिणामी क्षति होने की संभावना नहीं है। चूंकि संबद्ध देशों द्वारा तीसरे देशों को किए गए निर्यात के बारे में अधिकांश सूचना केवल वार्षिक आधार पर उपलब्ध है, इसलिए प्राधिकारी ने वर्ष 2010 और 2011 के लिए संगत आंकड़ों पर विचार किया है।

81. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों की उपर्युक्त टिप्पणियों पर संगत खंडों में संगत समझी गई सीमा तक विचार किया है। कुछ विशिष्ट टिप्पणियों की जांच निम्नानुसार की गई है :

82. जहां तक प्रकटन विवरण पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को अपर्याप्त समय दिए जाने के बारे में किए गए अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने विस्तारित समयावधि के भीतर जांच पूरी करने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रस्तुत करने के लिए चार दिन का समय दिया था। इसके अलावा, हितबद्ध पक्षकारों को सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण करने और अपने विचारों से अवगत कराने के लिए मौखिक सुनवाईयों (दो बार) में उपस्थित होने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं और उन विचारों को संगत सीमा तक ध्यान में रखा गया है।

83. कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण में इंगित विसंगतियों को दूर कर दिया गया है ।
84. प्राधिकारी द्वारा अनुमत राशि के साथ-साथ घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई बिक्री लागत के घटकवार दावे के ब्यौरे घरेलू उद्योग को प्रदान किए गए थे । इसके अलावा, क्षति रहित कीमत की गणना का आधार भी डी जी ए डी की परंपरानुसार प्रस्तुत किया गया है ।
85. जहां तक संबद्ध देशों द्वारा पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति तथा तीसरे देशों को पाटित आयातों के संभावित विपथन के बारे में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों का प्रश्न है, प्राधिकारी ने इन पर क्षति एवं संभावित क्षति विश्लेषण के संगत खंडों में विचार किया है ।
86. जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा अंतिम जांच परिणाम में प्रस्तुत जांचोत्तर अवधि के आंकड़ों को अपनाए जाने से संबंधित अनुरोध का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत जांचोत्तर अवधि के आंकड़ों पर लेखा परीक्षित लेखों के समाशोधन के बाद विचार किया गया है ।
87. जहां तक इस अनुरोध का संबंध है, कि प्राधिकारी ने अलग-अलग देशों के लिए अलग-अलग क्षति रहित कीमत अपनाई है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने न केवल जांच अवधि के लिए अपितु जांचोत्तर अवधि के लिए संबद्ध वस्तु हेतु माहवार क्षति रहित कीमत निर्धारित की है जो सभी संबद्ध देशों के लिए समान है । तथापि, चूंकि संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के आयातों की माहवार मात्रा अलग-अलग है, इसलिए प्रत्येक देश हेतु भारत औसत क्षति रहित कीमत समान नहीं है ।
88. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि दक्षिण अफ्रीका अन्य देशों को विनिर्देशन से इतर "फेनोल" का निर्यात कर रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि दक्षिण अफ्रीका के सहयोगी निर्यातक ने ऐसा कोई दावा नहीं किया है और इसलिए इस पर जांच के बिना इस चरण पर विचार नहीं किया जा सकता ।
89. जहां तक इस अनुरोध का संबंध है कि एच ओ सी एल के कोच्चि प्रभाग ने 2011-12 में 226.02 करोड़ रुपए का लाभ कमाया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने केवल 26.02 करोड़ रुपए का लाभ कमाया है ।

जांचोत्तर अवधि में निर्यातों की मात्रा और जांचोत्तर अवधि में पाटन एवं क्षति मार्जिन

90. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति और पाटन की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से भारत को हुए निर्यात की

मात्रा का मासिक विश्लेषण किया है । यह विश्लेषण सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर सिंगापुर तथा दक्षिण अफ्रीका के संबंध में किया गया है । जांचोत्तर अवधि के आंकड़ों का विश्लेषण मासिक आधार पर किए जाने के बारे में हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त टिप्पणियों के उत्तर में प्राधिकारी ने ई यू से भारत को हुए संबद्ध वस्तु के निर्यातों की सूचना का माहवार विश्लेषण किया है और यह नोट किया जाता है कि जहां जांचोत्तर अवधि के दौरान पाटन मार्जिन सकारात्मक है, वहीं क्षति मार्जिन नकारात्मक है । यह भी नोट किया जाता है कि जांचोत्तर अवधि के दौरान दक्षिण अफ्रीका से संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में सकारात्मक पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन है और इन मार्जिनों को काफी अधिक माना गया है ।

91. जांचोत्तर अवधि के दौरान भारत को सिंगापुर से हुए संबद्ध वस्तु के निर्यात के बारे में यह नोट किया जाता है कि यद्यपि पाटन मार्जिन सकारात्मक है तथापि, क्षति मार्जिन नकारात्मक है ।

घरेलू उद्योग की लाभप्रदता

92. जांचोत्तर अवधि में पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने जुलाई, 2011-दिसंबर, 2011 की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और लाभप्रदता का तिमाही विश्लेषण भी किया है ।

विवरण	इकाई	जांच अवधि	2011-12 (ति.2)	2011-12 (ति.3)
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.	75,540	78,193	80,467
	सूचीबद्ध	100	104	107
निवल बिक्री कीमत	रु./मी.ट.	95,556	89,606	79,620
	सूचीबद्ध	100	94	83
लाभ/हानि	रु./मी.ट.	20,016	11,414	(847)
	सूचीबद्ध	100	57	(4)

93. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि जांचोत्तर अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रतिकूल बन गया है ।

आयातों का पहुंच मूल्य, निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत

94. जांचोत्तर अवधि में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य का विश्लेषण भी किया है। यह नोट किया जाता है कि दक्षिण अफ्रीका और ई यू के संबंध में आयातों की पहुंच कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम रही है जिससे सकारात्मक कीमत कटौती का पता चलता है। तथापि, जांचोत्तर अवधि के दौरान सिंगापुर से आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत से अधिक रहा है जिससे नकारात्मक कीमत कटौती का पता चलता है।

संबद्ध देशों से तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत

95. प्रतिवादी निर्यातकों से संगत सूचना के अभाव में, प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर संबद्ध देशों से तीसरे देशों को हुए निर्यातों का विश्लेषण किया है और विधिवत समायोजनों के बाद उनकी तुलना घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत तथा निवल बिक्री कीमत के साथ की है। यह नोट किया जाता है कि दक्षिण अफ्रीका से तीसरे देशों को हुए निर्यात विधिवत समायोजनों के बाद जांचोत्तर अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत से कम रहे थे। इससे यह संकेत मिलता है कि दक्षिण अफ्रीका से हुए निर्यातों को यदि भारत में भेज दिया जाता तो सकारात्मक पाटन मार्जिन, कीमत कटौती और क्षति मार्जिन रहा होता जिससे यह सिद्ध होता है कि दक्षिण अफ्रीका से पाटनरोधी शुल्क वापस लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है। प्राधिकारी ने ई यू और सिंगापुर से हुए तीसरे देश को निर्यातों के बारे में इसी प्रकार का माहवार विश्लेषण किया है और यह नोट किया गया है कि जांचोत्तर अवधि के दौरान क्षति मार्जिन नकारात्मक था।

शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

96. यह नोट किया जाता है कि हालांकि सिंगापुर से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन नकारात्मक है। तथापि, ई यू और दक्षिण अफ्रीका का पाटन मार्जिन जांच अवधि के दौरान सकारात्मक है। समस्त संबद्ध देशों के लिए इसी अवधि के दौरान क्षति मार्जिन नकारात्मक है। तथापि, जांचोत्तर अवधि के दौरान दक्षिण अफ्रीका से पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन दोनों ही सकारात्मक हैं। यह भी नोट किया जाता है कि दक्षिण अफ्रीका से होने वाले तीसरे देशों के निर्यातों को यदि भारत भेज दिया जाता, तो पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन सकारात्मक रहा होता जिससे यह सिद्ध होता कि दक्षिण अफ्रीका से पाटनरोधी शुल्क वापस लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है। यह भी नोट किया जाता है

कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति जारी रहने की संभावना नहीं है । तथापि, वर्तमान उपाय वापस लिए जाने की स्थिति में दक्षिण अफ्रीका से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु के भारत में प्रवेश किए जाने की संभावना है क्योंकि दक्षिण अफ्रीका से हुए आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन काफी अधिक है । इसके अलावा, यद्यपि, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपने निष्पादन में सुधार किया है । तथापि, खासकर जांचोत्तर अवधि में घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और इसलिए यदि दक्षिण अफ्रीका से वर्तमान पाटनरोधी शुल्क वापस लिया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है । यह भी नोट किया जाता है कि उक्त पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में सिंगापुर और ई यू से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है ।

भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

97. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं । तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी । इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी । प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी । उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो या अधिक स्रोत रख सकते हैं ।

98. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयातों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगेगा; और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उन उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

अंतिम जांच परिणाम

99. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों अथवा उपर्युक्त जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार अन्यथा के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एवं वर्तमान तथा संभावित पाटन एवं क्षति की स्थिति और पाटन एवं क्षति जारी रहने एवं उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

(i) जांच अवधि के दौरान ई यू तथा दक्षिण से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन सकारात्मक है जबकि सिंगापुर के लिए नकारात्मक है ।

(ii) तथापि, यदि वर्तमान उपाय समाप्त किए जाते हैं तो भारतीय बाजार में दक्षिण अफ्रीका से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु के प्रवेश करने की संभावना है और दक्षिण अफ्रीका से आयातों के संबंध में संभावित पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन काफी अधिक है ।

(iii) यदि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जाता है तो सिंगापुर तथा ई यू से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है ।

(iv) यद्यपि, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपने निष्पादन में सुधार किया है, तथापि, घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है । इसके अलावा, यदि दक्षिण अफ्रीका से वर्तमान पाटनरोधी शुल्क वापस लिया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

100. यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में दक्षिण अफ्रीका से आयातों का पाटन होने और इसकी वजह से होने वाली क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, प्राधिकारी का यह मत है कि दक्षिण अफ्रीका से आयातों के संबंध में उपाय की अवधि को आगे बढ़ाना अपेक्षित है । तथापि, जहां तक दक्षिण अफ्रीका का संबंध है, लागू पाटनरोधी शुल्क की राशि में अब तक संशोधन किए जाने की जरूरत नहीं है । अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और दिनांक 4.8.2008 की अधिसूचना सं. 15/9/2007-डी जी ए डी तथा 31 अक्टूबर,

2008 की सी.शु. अधिसूचना सं. 114/2008 के तहत विनिर्दिष्ट दरों पर दक्षिण अफ्रीका से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करते हैं। सिंगापुर और ई यू से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति की सिफारिश की जाती है क्योंकि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को सिंगापुर तथा ई यू से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण क्षति जारी रहने या उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है।

101. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3, 8, 9 और 9 के अंतर्गत लागू शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

102. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार, सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 6th February, 2013

Final Findings

Subject :—Mid Term Review of Anti Dumping Duty imposed in respect of imports of Phenol originating in or exported from European Union, South Africa and Singapore—Final findings

No. 15/16/2011-DGAD.—A. Background of the Case

1. Whereas the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the AD Rules); recommended, inter alia, imposition of Anti Dumping duty on the imports of 'Phenol' (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from European Union, Singapore & South Africa (hereinafter also referred to as the subject countries) falling under Subheading 2907.11 and 2707.60 of ITCES. The final findings were notified on 15th February, 2003 and definitive anti dumping duties were imposed by the Central Government vide Notification No. 47/2003-Customs dated 24th March, 2003. A midterm review of anti dumping duty imposed was initiated on 14th July 2006 and the final findings were issued on 13th July 2007 vide notification 15/4/2006-DGAD which was amended on 25th July 2007. The revised definitive anti dumping duty was imposed on 31st August 2007 vide customs notification No.98/2007-Customs. A sunset review of the anti dumping duty was initiated on 10th August, 2007 and the final findings of the sunset review of the anti dumping investigation were issued on 4th August, 2008 vide notification no 15/09/2007 and definitive anti dumping duty was imposed on 31st October 2008 vide Customs Notification No.114/2008.

2. The Authority received a duly substantiated application from M/s Merino Panel Products Ltd (“The Applicant/Petitioner”), who is an importer of subject goods from subject countries requesting the Authority to undertake a Mid-Term Review of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from subject countries. The importer claimed changes in the parameters affecting dumping margin, injury margin and improvement in the operating performance of the domestic industry as major grounds for seeking mid term review. The Authority considered that changes in these circumstances necessitated initiation of a mid-term review.
3. Having satisfied that the applicant has provided sufficient positive information substantiating the need for a review, the Authority initiated the mid-term review investigation of anti-dumping duty imposed on imports of the subject goods originating in or exported from the subject country vide Notification No. 15/16/2011-DGAD dated 8th December, 2011 in accordance with Section 9A (5) of the Act, read with Rule 23 of the AD Rules. Following a request from the Designated Authority, the Central Government accorded permission for extension of time up to 6th February, 2013 for completing the subject investigation and notifying the final findings.

B. PROCEDURE

4. In these proceedings the procedure described below has been followed:

- i. The Authority received an application from M/s Merino Panel Products Ltd, an importer and consumer of subject goods, for review of the anti dumping duty in force on the imports of Phenol from the subject countries.
- ii. Having satisfied itself that the petitioner has produced sufficient prima facie information substantiating the need for a mid-term review, the Authority initiated the Mid Term Review investigation of anti-dumping duty earlier imposed on imports of the subject goods originating in or exported from European Union, Singapore & South Africa vide Notification No.15/16/2011-DGAD dated 8th December 2011 under Rule 23 of the AD Rules. The scope of the present review covers all aspects of the original Notification.
- iii. The Embassy of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise all the exporters/producers in their country to respond to the prescribed Questionnaire within the prescribed time.
- iv. The Authority sent Exporter Questionnaires, along with the Initiation Notification, to all the known producers and/or exporters of the subject goods in the subject countries in accordance with the Rule 6(4) of the AD Rules to elicit relevant information.
- v. In response to the notification, following exporters have filed their questionnaire responses. Barring these four companies, no other producer/exporter has furnished replies to the questionnaires in response to the above notification.
 - a. Merisol RSA Pty, South Africa
 - b. Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd, Singapore (MPS).
 - c. Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP).
 - d. M/s Petrochem Middle-east (FZE), Dubai.
- vi. Questionnaires were sent to the following known importers and users of the subject goods in India for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

- a. C. J. Shah and Company, Mumbai
- b. Haresh Kumar and Company, Mumbai
- c. PCL Industries New Delhi
- d. Kantilal Manilal and Company Mumbai
- e. Sonkamal Enterprises Mumbai
- f. Khetan Brothers Mumbai
- g. Shubam Dyes & Chemicals Limited Delhi
- h. Acron Enterprises Ahmedabad
- i. Naiknavare Chemicals Limited Mumbai
- j. Paras Dyes & Chemicals New Delhi
- k. Torrent Pharmaceuticals Limited Gujrat
- l. United Phosphorous Ltd. Mumbai
- m. Resins & Plastic Ltd. Mumbai
- n. Kailash Polymers New Delhi
- o. Centrum Metalics Pvt. Ltd. Mumbai
- p. Wonder Laminates Pvt. Ltd. West Bengal
- q. Meghdev Enterprises Ahmedabad
- r. Satguru International New Delhi
- s. High Polymer Labs Ltd. New Delhi
- t. Rainbow Colours & Chemicals Gujrat
- u. Bleach Marketing Pvt. Ltd. Gujrat
- v. Karmen International (P) Ltd. Tamil Nadu
- w. Krishna Antioxidants Pvt. Ltd. Mumbai
- x. NGP Industries Ltd. New Delhi
- y. Farmson Pharmaceutical Gujrat Ltd. Baroda
- z. India Glycols Ltd. New Delhi
- aa. Singh Plasticisers and Resins (I) Pvt. Ltd. New Delhi

In response, the following interested parties have filed their submissions.

- a. Merino Panel Products Ltd;
 - b. Green Ply Industries Ltd,
 - c. Exim-Corp India Pvt Ltd
 - d. Century Plyboards (I) Ltd.
 - e. Federation of Indian Plywood and paper industry.
- vii. The imports data for the period of investigation and preceding three years was called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S). The information of imports of subject goods from subject countries was adopted from data from DGCIS.
 - viii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
 - ix. In response to the initiation notification M/s Hindustan Organics Ltd has submitted the information/data, as domestic industry, for undertaking injury analysis. No information was received from the other domestic producer during the same period.

- x. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 29th May, 2012. Further, in view of change in the Designated Authority, another opportunity for hearing was provided to all interested parties on 27th December, 2012. The parties who presented their views orally in the public hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The arguments made in the written submissions/rejoinders received from the interested parties have been considered, wherever found relevant, in this statement.
- xi. The period of investigation for purposes of the present review is April 10-June 11. However, injury analysis shall cover the years Apr'07-Mar'08, Apr'08-Mar'09, Apr'09-Mar'10 and Apr'10-Jun' 11. In order to find out whether the dumping margin, injury and injury margin determined for POI are of lasting nature, the Authority examined the data for the post POI period - i.e. from July 2011 to December 2011.
- xii. Cost investigations were conducted to determine non-injurious price based on the cost of production of the subject good in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to ascertain if anti-dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry, or the domestic injury will not face any injury in the event of revocation of duty. The NIP has been computed in terms of the principles mentioned in Annexure III to the AD Rules.
- xiii. On the spot verification of the data provided by the applicant was carried out to the extent considered necessary. The Authority during the course of investigation satisfied itself as to the adequacy and accuracy of the information supplied. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have been considered in Final Findings.

The following interested parties submitted their response to the disclosure statement within the stipulated time:

- Exim-corp India Private Ltd
- M/s HOCL, the domestic industry.
- M/s Century Plyboard (I) Ltd
- M/s Mitsui & Co (Asia Pacific), Singapore.
- M/s Merino Panel Products Ltd ("The Applicant/Petitioner"),
- MITSUI PHENOLS SINGAPORE PTE. LTD., Singapore
- Petrochem Middle East FZE,UAE
- Merisol RSA (Pty) Ltd, South Africa

It is stated that the submissions made by above mentioned interested parties pursuant to the issuance of disclosure statement has been dealt in the appropriate headings of the final finding

- xiv. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded its analysis on the basis of the facts available.
- xv. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xvi. *** in the final findings represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE:

- 5. The product under consideration, as in the original investigation and also in the present review application is Phenol.

C.1 Views of the Domestic Industry

- 6. The product involved in the original investigation, and in the present midterm review investigation is Phenol. The product under consideration in the present midterm review is the same as has been held by the Designated Authority in the previous investigations.

C.2 Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested Parties

- 7. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties, has filed any comment or submissions with regard to product under consideration, and like articles.

C.3 Examination by the Authority

- 8. The Authority notes that product under consideration, as in the original investigation and also in the present review application is Phenol. As per the original investigation carried out by the Designated Authority the product has been defined as under:

"Phenol, is a basic organic chemical normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. The product is classifiable under Customs Tariff heading no. 2907.11. The product is marketed in two grades Crystalline and Hydrated. The two grades are differentiated on the basis of flow characteristics of Phenol. The product is marketed in two forms - loose and packed. Loose sales are normally in bulk, whereas packed consignments can be of much smaller container loads. Phenol is used in the manufacture of Phenol-formaldehyde Resins, Laminates, Plywood, Particle Boards, Bisphenol-A, Alkyl Phenols Pharmaceuticals, Dephenyl Oxide, etc."

- 9. There is no argument from any interested party with regard to the scope of product under consideration. The present investigation being a midterm review investigation, the scope of

the product under consideration in the present investigation is, therefore, the same as the original investigation.

D. DOMESTIC INDUSTRY

D.1 Views of the Domestic Industry

10. HOCL production constitutes a major share in Indian Production. HOCL therefore constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.

D.2 Views of the Exporter, Importers, Consumers and Other Interested Parties

11. There is no argument from any interested party with regard to the standing and scope of the domestic industry.

D.3 Examination by the Authority

12. It is noted that only Hindustan Organic Chemicals Ltd. (HOCL) has responded to the notice of initiation as a domestic producer of the subject product. The company claimed that there are only two producers of the subject product – SI Group being the other producer in India. HOCL claimed that its production of the subject goods constitutes a major proportion in Indian production. It is further noted that none of the interested parties participating in the present investigations have disputed the claim of HOCL. The information on record of the Authority shows that production of HOCL constitutes a major proportion in Indian production and therefore HOCL has been treated as “domestic industry” within the meaning of the Rules.

E. MISCELLANEOUS SUBMISSIONS

E.1 Views of the Exporter, Importers, Consumers and Other Interested Parties

13. The exporters, importers and other interested parties have submitted as under:-

- i. Amended rule 23(1A) of AD Rules requires only positive information substantiating a need for review. Thus, the information now sought under Rule 23(1A) is substantially different from old Rule 23.
- ii. The claim of the domestic industry that the initiation of MTR investigation is unjustified on the ground that need for withdrawal is not established by the applicant does not hold merit as the amended Rule 23 requires only positive information to be submitted for the initiation, which was provided by the applicant.
- iii. Applicant is not required to establish the need for withdrawal of anti-dumping duty, but is only required to submit information establishing the need for review. It is for the DGAD to consider and determine whether there is sufficient justification for withdrawal of anti dumping duty before completion of five years.
- iv. The investigation was rightly initiated by the Authority based on the positive evidence provided by the applicant substantiating the need for review and demonstrating changed circumstances on various relevant criteria.

- v. The objection to the various issues being raised by the opposing interested parties, under the pretext that they had not been raised earlier and therefore could not be raised at this stage is not only against the Anti-Dumping Rules, but also against the principles of natural justice.
- vi. It is an understood principle that the standard of examination for likelihood is higher in a sunset review than a mid-term review.
- vii. There is a substantial difference between the figures claimed by the two different communications submitted by the Domestic Industry. Sales value has grown by 49% but has been shown to grow only by 18%. Consequently, price which has actually grown by 40% has been shown to grow only by 10%. As a consequence, none of the indexed figures of the domestic industry now seem reliable.
- viii. Holding public hearing without disclosure of essential facts and conclusions arrived at by the Authority is premature. Quasi judicial propriety obliges the Designated Authority to make available essential facts and its findings in the case so far on which a public hearing could be addressed by the interested parties.
- ix. Subsequent to the issuance of the disclosure statement, various interested parties representing Exporter, Importers, Consumers have reiterated their views which have been mentioned above.

E.2 Views of the Domestic Industry

14. The domestic industry has submitted as under:-

- i. If the Designated Authority is required to undertake a determination of likelihood of dumping and injury, the petition must contain at least a prima facie information and evidence about the same.
- ii. Applicant has claimed that it is not required to establish the need for withdrawal of duty and mere information on a "need for review" is sufficient in MTR however, the Designated Authority does not apply such a test for sunset review. There is no justification for a discriminatory approach between a sunset review and a midterm review.
- iii. There is nothing new in the information filed. All information contained in this injury statement can alternatively be determined from the verification documents. The Authority may consider the information provided by the domestic industry during the course of investigations and verified by the Designated Authority.
- iv. The law provides for presentation of information orally during the course of the investigations. The Designated Authority has clearly provided such an opportunity.
- v. Subsequent to the issuance of the disclosure statement, the domestic industry has reiterated its views which have been mentioned above.

E.3 Examination by the Authority

15. The miscellaneous submissions made by the interested parties have been examined and addressed by the Authority as follows:

- i. With regard to the submission of the interested parties that amended rule 23(1A) requires only positive information substantiating a need for review, the Authority notes that rule 23 (1A) states as follows:

(1A) The designated authority shall review the need for the continued imposition of any anti-dumping duty, where warranted, on its own initiative or upon request by any interested party who submits positive information substantiating the need for such review, and a reasonable period of time has elapsed since the imposition of the definitive anti-dumping duty and upon such review, the designated authority shall recommend to the Central Government for its withdrawal, where it comes to a conclusion that the injury to the domestic industry is not likely to continue or recur, if the said anti-dumping duty is removed or varied and is therefore no longer warranted."

It may be seen from the above that the Authority shall review the need for the continued imposition of antidumping duty upon a request made by an interested party provided that such party submits positive information substantiating the need for such review and a reasonable period of time has elapsed since the imposition of the definitive anti-dumping duty. In the instant case the Authority, after examining the positive evidence regarding the need for continued imposition of antidumping duty submitted by the petitioner and after satisfying that sufficient time has elapsed since the imposition of antidumping duty has initiated the investigation in terms of Rule 23 (1A) supra.

- ii. With regard to the submission on the non conformity of data, the Authority notes that it has adopted the data for the present investigation after duly verifying the same.
- iii. With regard to the submission that the essential facts need to be disclosed before holding the oral hearing, the Authority holds that there is no merit in the argument as the purpose of holding public hearing is to give opportunity to the interested parties to present information relevant to the investigation whereas the purpose of disclosure of essential facts under the consideration of Authority before the issue of final findings under Rule 16 is to provide an opportunity to the interested parties to submit their comments if any on such facts for the consideration of the Authority. Accordingly, the submissions made by interested parties pursuant to the issuance of disclosure statement have been dealt in the appropriate headings of this final finding.

F. Confidentiality

F.1 Views of the Exporter, Importers, Consumers and Other Interested Parties

16. The exporters, importers and other interested parties have submitted as under:-

- i. The domestic industry has claimed excessive confidentiality in particular on account of selling price when such prices of HOCL are available from the Annual Reports of the company. Such prices are available from disclosure of quantitative information in the published annual reports which is available in the public domain.
- ii. HOCL has claimed confidentiality without providing any reasons how competitors can take advantage from the disclosure of such information.

- iii. The non-confidential version of the first communication provides complete details of sales, price and cost on a monthly and quarterly basis. On the other hand, the second communication has indexed these figures.

F.2 Views of the Domestic Industry

17. The domestic industry has submitted as under:-

- i. The annual report only contains information with regard to sales volumes and sales value. The same cannot lead to determination of net sales realization. The Designated Authority considers net sales realization and not average selling price of the total sales based on sales volume and sales values.

Examination by Authority

18. With regard to confidentiality of information Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

(1) Notwithstanding anything contained in sub-rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.

19. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. The Authority made available to all interested parties the public file containing non-confidential version of evidences submitted by various interested parties for inspection. The Authority examined the confidentiality claims of the interested parties and on being satisfied with regard to claim on confidentiality, the same has been allowed. In response to the comments to the disclosure statement about the excessive confidentiality, it is stated that all the volume information is disclosed on absolute basis while the price information has been provided on a indexed basis. Similarly, the exporter's information in relation to domestic selling prices, export prices and dumping margin has been provided on indexed basis. Further, the non injurious price and injury margin have been provided on indexed basis and ranges have been given. On the issue of providing export prices and normal values of producers and exporters

from subject countries on monthly basis, it is stated that dumping margin and injury margin has been determined for the POI and post POI period as per the confidential data provided by the responding producers and exporters (from Singapore and South Africa) and hence these have not been divulged. However, the ranges of the dumping margin and injury margin for the post POI period are provided in the final findings. In response to comments from the interested parties, the Authority has examined the information on monthly basis for exporters of subject goods from EU.

G. NORMAL VALUE AND DUMPING MARGIN

G.1 Views of the Exporter, Importers, Consumers and Other Interested Parties

20. The exporters, importers and other interested parties have submitted as under:-

- i. The methodology for allocation and apportionment of raw material and utilities cost for the purpose of constructed normal value must remain identical to that in the earlier SSR investigation for the consistent application of methodology.
- ii. Comparison of cost of production as given in the communication by HOCL with the constructed normal value for the period of investigation shows significant difference which is not the Domestic industry's costs or rates which have been employed to construct costs. Therefore, such data cannot be accepted without a proper source and explanation.
- iii. Same normal value has been constructed for all sources of imports. No adjustments have been made taking into account the market conditions, efficiency levels and utility costs in the various import sources.
- iv. There is a mismatch between the exports from South Africa provided by the Domestic Industry and as per the Exporter as the Exporter is the sole known producer of the subject goods in South Africa.
- v. Normal value is highly inflated. The basis that has been adopted while considering Benzene and LPG prices in the computation of CNV has not been disclosed.
- vi. Calculation of normal value as per the figures given in the Annual Report of HOCL shows the dumping margin to be negative for European Union and Singapore and less than 2% for South Africa.

G.2 Views of the Domestic Industry

21. The domestic industry has submitted as under:-

- i. No efforts have been made by the applicant to compare normal value and export price on month to month basis, as there have been significant variations in the raw material prices, which would have led to significant variations in the associated costs and prices of the product.
- ii. Export price to third countries cannot form the basis of normal value, unless it is established that such export price is in the ordinary course of trade.

- iii. If normal value on the basis of third country price is low, the Designated Authority is required to consider whether such third country price are in the ordinary course of trade by reason of cost (i.e., above cost of production).
- iv. Petitioner has selectively provided information in respect of some country in such a manner as would show no dumping.
- v. The volumes considered in respect of exports to India do not match with the volume reported in the exporting country trade data. Evidently, the period for which information has been considered for normal value is different from the period for which information has been considered for export price.
- vi. Determination of dumping margin should be done on monthly basis, as the price of the raw material changed substantially on month to month basis.

Examination by the Authority

22. Under section 9A (1) (c) normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

23. The Authority has examined the contention of various interested parties and after examining the same, normal value and export price has been determined. It is further noted that normal value has been determined based on responses filed by cooperating producers and exporters from subject countries after taking into account the domestic sales price of subject goods of these producers and their costs of production. Export price has been determined net of adjustments which have been verified by the Authority. As there is no cooperation from any of the producers and exporters from European Union during the investigation, normal value has been constructed taking into account the international price of major raw material and other costs as per the best information available and after adding 5% profit margin. It is noted that the Authority has analyzed the data culled out from transaction wise data as received from DGCIS and also from the data made available by the petitioner from UNCOM trade and for POI as well as post POI. It is noted that the Authority sent questionnaire to the known exporters of subject goods from subject countries. It is also noted that exports quantity of producers and exporters

from subject countries have been taken into account for the purpose of normal value and export price for POI as well as post POI. Wherever there is a gap in the exporter's data because of nil exports during those months, DGCIS information has been used. For post POI, as well, the Authority has taken into account information made available from producers and exporters, DGCIS data as well as data made available from UNCOM trade to the extent the same was available.

24. The Authority had asked all known producers and exporters from subject countries to submit information in the form and manner of exporter's questionnaire. In response to the same, the following producers and exporters have submitted Exporters Questionnaire and have requested the Authority to base their dumping margin determination on the basis of their questionnaire response.

- a. Merisol RSA Pty, South Africa.
- b. Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd, Singapore (MPS).
- c. Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP).
- d. M/s Petrochem Middle-east (FZE), Dubai.

General methodology followed for the responding exporters for determination of Normal Value

25. It has been contended by the Domestic Industry that there had been volatility of the prices of the subject goods during the Period of Investigation. The Authority has, therefore, done a month-wise analysis of the entire data for the determination of dumping. Necessary data from the cooperating producers/exporters was called for undertaking month-wise analysis and the Dumping Margin has been assessed on monthly basis based on such data submitted by the co-operating producers/exporters.

26. The Authority has assessed the Normal Value based on the information submitted by the exporters and in accordance with the Rules. It was first seen as to whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters/producers in their home markets were representative and viable for permitting determination of Normal Values on the basis of their domestic selling prices and whether such domestic sales satisfied the ordinary course of trade test. In their responses, the respondents have provided transaction-wise details of sales made in their home markets. The information so provided has been relied upon to determine separate weighted average domestic selling price for the subject goods. For the determination of the ordinary course of the trade test, the costs of production of the product concerned have been accepted as verified during the on-the-spot verification. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the costs of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade. It was also seen whether the loss-making transactions account for over 20% of the sales or not. Wherever the profitable domestic sales transactions were found to be accounting for more than 80% of the total sales, the weighted average price of the domestic sales have been taken into consideration. Wherever the profitable sales volume were found to be less than 80%, the weighted average price of the profitable domestic sales has been taken into consideration.

Determination of dumping margin for producers and exporters from Singapore**Normal value in Singapore for M/s MPS**

27. The Authority notes that M/s Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd., (MPS) and M/s Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP) from Singapore has responded to the Authority and has submitted exporter questionnaire response. Their response along with the additional information submitted during the course of the proceedings was examined and it was noted that the product concerned is produced by the Company Mitsui Phenols Singapore Pte Ltd (MPS). It was further noted that in terms of the production process, benzene and propylene are procured from domestic as well as imported sources to produce cumene. From cumene, the company produces phenol and acetone. It was noted during the verification that domestic sales are made by this company directly to domestic customers except DAS where the sales are made through MAP. It was explained that some of the sales (less than ***%) are being made through MAP largely due to historical reasons as some of the clients had approached them first. However, more than ***% of the sales were made directly to the customers in Singapore. Further, it was noted that all the sales whether domestic or exports through MAP were made on bulk basis through the vessel and there was no drum sales involved.

28. It was further noted that M/s MAP was a trader and was procuring the subject goods from their related company M/s Mitsui Phenols Singapore PTE. Ltd., (MPS) and also from other sources. However, during the POI, they had sold the subject goods to India which was procured only from MPS. In fact, shipments to India by MAP carried the origin certificate from Singapore. It was also noted that the company was also selling the subject goods in the domestic market which it had bought from its related company M/s MPS.

29. It was further noted that there was *** transaction of the subject goods being exported by the co-operating producer M/s MPS, Singapore and related trader M/s MAP, Singapore during the POI through Petrochem Middle East FZE, Dubai. The information submitted by the company in Appendix II was verified during the visit. The company clarified that it has purchased one consignment of the subject goods from Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP). This consignment was manufactured by Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd. (MPS). The total quantity of the single consignment of Phenol exported by the company during the period of investigation to India was *** metric tons. Since Petrochem Middle East FZE is a trading company, the sales data and SGA expenses submitted by the company was verified from the original documents and the computerized accounting system.

30. The response filed by the company was examined. It is noted from the questionnaires response that the company has given month-wise costing for the subject goods. SGA expenses have been claimed on the basis of turnover. It is noted that the domestic sales meet the sufficiency test. The cost of production of the subject goods as indicated in Appendix-8B of the

response has been accepted as verified during the on-the-spot verification for the purposes of carrying out the ordinary course of trade test. Adjustments thereof have been allowed as noted and verified during the on-the spot verification. Based on such a determination, the Normal Value has been worked out on a monthly basis.

Normal value in South Africa

31. It was noted that the subject goods are manufactured at Sasolburg, wherein Merisol has facility to produce the PUC. In this facility, Sasol is the related company of Merisol which manages the logistics both in terms of the inputs, as well as the product under consideration. It was noted that the primary material used in the manufacturing of the product concerned is LNO DTA (Light Neutral Oil Depitched Acid). It was noted that there is no difference in the factory cost for exports to India, for sales in domestic market and for exports to other countries. Merisol-RSA receives its main raw materials, called Depitched Tar Acids (DTA) from Secunda. The DTA is purified using two processes, namely *** and ***. After these purification steps the intermediate product, called *** is sent to a distillation process to produce Phenol.

32. It was noted that the Company has reported *** transactions as domestic sales and *** transactions as rebates in Appendix -1. The Company has sold *** MT of the subject goods in the domestic market. The company has claimed adjustments on account of Inland Freight, Insurance and Credit Expenses, which was allowed after verification. The normal value as arrived is mentioned in the table showing dumping margin. The response filed by the company was examined including month wise data. It is noted that the domestic sales meet the sufficiency test. The cost of production of the subject goods as indicated in Appendix-8B of the response has been accepted as verified during the on-the-spot verification for the purposes of carrying out the ordinary course of trade test. Adjustments thereof have been allowed as noted and verified during the on-the spot verification. Based on such a determination, the Normal Value has been worked out on monthly basis.

Normal value for other non responding producers and exporters and all producers and exporters in European Union

33. Since no response has been received from any producer/exporter of the subject goods from EU; the Authority has determined the Normal Value in EU as per facts available in terms of Rule 6(8) of the Anti Dumping Rules. Data has been collated from the information provided by the applicant, the transaction wise information received from DGCIS and other sources.

General methodology for determination of export price for the responding exporters

34. The Authority has examined the export prices in respect of responding exporters on the basis of questionnaire responses filed by them. The export prices and the adjustments thereof have been allowed after examination as noted during the on-the-spot verification.

EXPORT PRICE and Dumping margin for subject countries**Export price for MPS, Singapore through MAP to India.**

35. It is noted that M/s MAP was a trader and was procuring the subject goods from their related company M/s Mitsui Phenols Singapore PTE. Ltd., (MPS) and also from other sources. However, during the POI, they had sold the subject goods to India which was procured only from MPS. In fact, shipments to India made by MAP carried the origin certificate from Singapore. It was also submitted that the company was also selling the subject goods in the domestic market which it had bought it from related company M/s MPS.

36. It was noted that the Company had made three transactions of exports of subject goods to India during the POI in the months of April 2010 and October 2010. It was also noted that *** transaction was made through another trader M/s Petrochem Middle East FZE, Dubai. It is noted that M/s Petrochem Middle East FZE, Dubai has cooperated in this investigation and had submitted their export price to India in respect of the subject goods procured from MAP (and was produced by MAS). The adjustments on account of expenses of the MAP has been taken into account to determine ex factory price for M/s MPS for the subject goods which have been exported through MAP to India. The dumping margin has been determined by comparing the month wise export price to their respective normal value at the ex factory level.

Export price for MPS through MAP and M/s Petrochem Middle-east (FZE), Dubai to India.

37. It is noted that the company is primarily engaged in the trading of a wide range of Chemicals and Petro Chemicals. The Dubai unit of the company is engaged in the trading of the subject goods. It was noted that there was one transaction involving the subject goods being exported from the co-operating producer M/s MPS, Singapore and related trader M/s MAP, Singapore during the POI. The information submitted by the company in Appendix II was verified during the visit. The company clarified that it has purchased one consignment of the subject goods from Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP). This consignment was manufactured by Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd. (MPS). The total quantity of the single consignment of Phenol exported by the company during the period of investigation to India was *** metric tons. Since Petrochem Middle East FZE is a trading company, the sales data and SGA expenses submitted by the company was verified from the original documents. The adjustments on account of expenses of the FZE and MAP has been taken into account to determine ex factory price for M/s MPS for the subject goods which have been exported through MAP and FZE to India. The dumping margin has been determined by comparing the month wise export price to their respective normal value at the ex factory level.

Export price for Merisol, South Africa

38. It was noted that the Company has reported *** transactions as export sales in Appendix -2. The Company has sold *** MT of the subject goods in the export market. Adjustments were claimed on account of Agent Commission, Inland Freight, Ocean Freight, Clearance and handling and Credit Expenses and Bank Charges which was allowed after verification of the same. The net export price as arrived is mentioned in the table showing dumping margin. The dumping margin has been determined by comparing the month wise export price to their respective normal value at the ex factory level. Thereafter, a weighted average dumping margin for the cooperating producers and exporters has been determined.

Determination of Export Price and Dumping margin in respect of Non-Co-operative Exporters/Producers from Singapore and South Africa

39. Since no other response has been received from any other producer/exporter of the subject goods from Singapore; the Authority has determined the Export prices as per facts available in terms of Rule 6(8) of the Anti Dumping Rules. Data has been collated from the information provided by the applicant, the co-operative exporters and by the Domestic Industry. With regard to the export price and Dumping margin for residual producers and exporters from South Africa, it is noted that apart from the cooperating producers and exporters, there is no other producer of subject goods on record with the Authority. In view of this, same dumping margin has been determined for residual producers and exporters from South Africa.

Determination of Export Price and Dumping margin in respect of Exporters/Producers from EU

40. Since no response has been received from any producer/exporter of the subject goods from USA; the Authority has determined the Export prices as per facts available in terms of Rule 6(8) of the Anti Dumping Rules. Data has been collated from the information provided by the applicant as well as transaction wise imports information received from DGCIS.

DUMPING MARGIN for the POI

41. Considering the month wise Normal values and Export prices as determined above, the dumping margins have been determined as follows:

Sl. No.	Country	Producer	Exporter	Dumping Margin US\$/MT	Dumping Margin %
1	South Africa	Merisol RSA Pty, South Africa.	Merisol RSA Pty, South Africa.	***	10-15
		Others	Others	***	10-15
3.	Singapore	Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd, Singapore (MPS).	Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP).	(***)	(10-15)

4.		Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd, Singapore (MPS)	M/s MAP and M/s Petrochem Middle- east (FZE), Dubai.		
5.		Other Producers and exporters	Other Producers and exporters	***	0-5
6.	European Union	All producers	All Exporters	***	0-5

H. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

H.1 Views of the Exporters, Importers and Other Interested Parties

42. The exporters, importers and other interested parties have submitted as under:-

- i. DGAD is required to compare the injury factors existing during POI of present case with the injury factors existing at the time of previous investigation.
- ii. Domestic industry is performing extremely well, while at the same time, import prices have been consistently increasing.
- iii. Considering the post POI information submitted by HOCL, it seems that injury if any (in Q3 2011-12) caused to the domestic industry is self-inflicted. Landed price of imports were Rs.84330/MT whereas the selling price of domestic industry was Rs.79975/MT, which clearly shows that imports have not forced the company to reduce its price.
- iv. Cost and price of domestic industry are less than the landed price of imports for Q3, 2011-12. This has been done to show loss to domestic industry and a positive price undercutting.
- v. Selling price as shown in the indexed form is substantially lower than the selling price as has been given by HOCL.
- vi. Two concluded MTR investigation held that NSR of the domestic industry is higher than the NIP of the domestic industry. Thus it is fair to assume that in the present case also, domestic industry is earning more than its NIP. The letter by HOCL also supports this view.
- vii. No price depression and price undercutting is present in the present period.
- viii. There is no evidence of continuance of injury on account of imports from subject countries.

- ix. Price underselling: estimated calculation (source Annual reports) of NIP should not be more than Rs.69,032/MT. Reference has been made to Acrylic Fibre case, wherein CESTAT held that there was no likelihood of material injury to the domestic industry on the basis of similar data.
- x. Price undercutting: price undercutting on paper may be because of the high domestic sales realization. NSR of the domestic industry was not only above NIP but also higher than the prices prevailing in the international market.
- xi. Price suppression: whereas both the cost of production and selling price of subject goods increased over the injury period, the increases in the selling price were far more than increase in the cost of production.
- xii. Profitability of the domestic industry has significantly increased during the POI. Further, selling price as provided in the Proforma IV A appears to be incorrect as selling price as calculated from the Annual Report shows that the same cannot be below Rs 94,533/MT.
- xiii. According to market information, the domestic industry lost almost 60-70 days for maintenance during the POI. The reason for such shut down, whether normal or abnormal, needs to be enquired and effects of such closure should be excluded from the injury parameters.
- xiv. Depreciation amount has significantly increased by 625 points in POI as compared to base year, whereas the plant capacity has remained the same. Authority must verify basis of allocation or apportionment of depreciation from financial records or cost record rules.
- xv. Designated Authority should call for SI Group's injury data so as to be able to make the injury and threat determination for the domestic industry. In any event, the injury figures of HOCL clearly indicate that no injury has been suffered by the domestic industry. Further, no likelihood of dumping implies a need for withdrawal of imports.
- xvi. Imports from South Africa have remained fairly low in the period of investigation as well as the period before the period of investigation.
- xvii. Domestic industry has not included SI's sales figures while calculating demand. By excluding SI Group's sales figures, the domestic industry has managed to reduce market share of the domestic producers.
- xviii. Domestic sales, capacity utilization, selling price, profits, etc shows significant improvement.
- xix. Final findings for Phenol MTR (Taiwan and USA) determined a NIP for the year 2010 (Jan-Dec) for HOCL. Thereafter, upon comparing this NIP with the landed value for USA calculated the injury margin. Landed value for USA is known. Therefore NIP range could be calculated. The analysis shows that NIP is still lower than NSR of the domestic industry. Accordingly, it could also be calculated that price underselling is negative.
- xx. Depreciation of the Domestic Industry has increased alarmingly over the injury period as compared to the base year despite there being no capacity expansion over the injury period.
- xxi. The claim of domestic industry that the original plant of the company is fully depreciated as per its own books of account is contradictory to the principles set out in Annexure III of the Anti-dumping Rules. Domestic Industry cannot claim depreciation as per "market

- value" of the Assets and must be made in accordance with the value as per the books maintained by the company.
- xxii. On comparison of the selling price and cost of production with the landed values provided by the domestic industry for post POI, Q3 2010-11 shows negative undercutting. At the same time, the selling price of domestic industry remains below the cost of production even when the landed values are above cost for the second quarter after the period of investigation
 - xxiii. Situation prevailing during 2008 is completely different from that prevailing at the time of SSR investigation.
 - xxiv. DGAD has already concluded that imports from USA at Rs.75.9/MT are neither causing any injury nor are likely to cause injury in future to domestic industry, then it is unlikely that there would be any injury to domestic industry from imports coming from subject countries whose prices are higher than USA's landed price.
 - xxv. HOCL's information reveals that the loss suffered by the domestic industry is self-inflicted. As during Q3 of 2011-12, the landed value of imports was Rs. 84330/MT while the selling price of the domestic industry was only Rs.79975/MT.
 - xxvi. During Q3 of 2011-12, the selling price of domestic industry is lower than its cost of production, both of which, in turn, are lower than landed value of imports.
 - xxvii. In the MTR investigation on imports from USA & Taiwan and Korea, DGAD held that during January 2010-June 2011, NSR of the domestic industry was consistently higher than its NIP. The POI in the present investigation is April 2010 to June 2011. Thus, it is fair to assume that in the present case also, domestic industry is earning more than its NIP.
 - xxviii. There is a need for restricting the period for post POI analysis.
 - xxix. There are no significant imports from Singapore. The import volumes decreased and at the same time, import prices increased substantially from EU and South Africa.
 - xxx. Claim of domestic industry for adjustments in its NIP holds no merit. DGAD has computed NIP based on Annexure III to AD Rules. There is absolutely no need to deviate from this practice. Any grievance with regard to computation of NIP, then the appropriate remedy is filing an appeal before CESTAT.
 - xxxi. Data presented in the paper book is completely different from the submission filed earlier.
 - xxxii. Domestic industry should explain as to why the domestic industry did not produce the volume targeted or produced in the preceding financial years.
 - xxxiii. Designated Authority must obtain the cost data certified by the domestic industry' Cost Auditors as per requirement in Annexure-III than to rely on superficial verification carried out by its own officers without an objective examination of factors underlying under utilization of the capacity.
 - xxxiv. Annual report of the domestic industry for the year 2011-12 has inter-alia observed that its consumption of power and utilities have remained high as a result of '*reduction in capacity utilization.*' No reasons have been attributed as to why the management has decided to reduce the capacity utilization.
 - xxxv. Domestic industry has the ability to raise the selling prices whenever thought necessary even on daily basis. The discounts are also allowed on case to case basis without any uniform policy and these are maximum discount, therefore, injury caused is not attributed to imports.

- xxxvi. Domestic industry has also not made out any case to demonstrate the risk of recurrence and therefore DA cannot assume the function of risk recurrence assessment in this case.
- xxxvii. Vastly different set of manipulative data from domestic industry have been possible.
- xxxviii. Price underselling: Estimated calculation (source Annual Reports) of NIP should not be more than Rs. 69,032/MT.
- xxxix. Price undercutting: Price undercutting on paper may be because of high domestic sales realization. NSR of the domestic industry was not only above NIP but also higher than the prices prevailing in the international market.
- xl. Price suppression: Whereas both the cost of production and selling price of subject goods increased over the injury period, the increases in the selling price were far more than the increase in the cost of production.
- xli. According to market information almost 60-70 days for maintenance during the POI. The reason for such shut down, if normal or abnormal, needs to be enquired and effects of such closure should be excluded from the injury parameters.

H.2 Views of the Domestic Industry

43. The domestic industry has submitted as under :

- i. The argument that performance of the domestic industry improved with regard to production and sale is factually incorrect. The information provided by the domestic industry clearly shows decline in production, sales, capacity utilization, market share and rise in inventories. Even with regard to profits, ROI, etc., performance of the domestic industry improved in 2010 and deteriorated in 2011.
- ii. As regards the selling price in Q3, the landed price of imports in this period declined to as low as Rs.71,715/MT which is much lower than the selling price of the domestic industry. Imports from various countries constituted majority of the market and therefore the only option to the domestic industry was to align its prices in the direction of imports.
- iii. The difference between non injurious price and net sales realization is immaterial in a midterm review investigations as has been held by the Authority in a number of cases. Anti dumping duties have been extended in various SSR cases where non injurious price was lower than net sales realization. In the present case, it is only a midterm review and therefore the objective is extremely limited.
- iv. The mere fact that non injurious price is lower than NSR does not imply that the imports are not causing injury. The purpose of non injurious price is merely to determine injury margin.
- v. In the investigations relating to digital printing plate, despite the fact that this was a fresh investigations and the performance of the domestic industry shows no “volume injury”, the Authority held that domestic industry suffered injury, even though price parameters in this case showed consistent improvement.
- vi. The facts of the present case clearly establish that 22% Return on Capital Employed is leading to absurdity, as 5% profit on cost of production is allowed even for foreign produces for constructing normal value. It cannot certainly be reasonable to consider that the reasonable profits for domestic industry shall be a meager 1-2% profit on the cost of production. Thus, if calculations are leading to certain absurdity, the Designated Authority must consider appropriateness of the same.

- vii. Responding to various submissions of the interested parties with regard to difference in the data or change in the data, the domestic industry has submitted that the Authority may consider the information provided by the domestic industry during the course of investigations and verified by the Designated Authority.
- viii. Reason for lower production is inability of the domestic industry to sell the goods in view of cheaper material available in the market from foreign suppliers. Rising inventories is the evidence in this regard.
- ix. The injury margin and dumping margin in post period of investigation have become negative. Further, the Designated Authority has already recognized in the previous investigations relating to midterm review of phenol and acetone that the weighted average for the period of investigation is highly misleading and the Authority may adopt a month by month comparison.
- x. The non injurious price is required to be determined considering gross fixed assets and that too at current market values.
- xi. With regard to profit/loss, return on capital employed and cash flow, the information clearly shows that the performance of the domestic industry improved during 2010 and deteriorated thereafter consistently in 2011 to such an extent that domestic industry suffered financial losses in Oct.-Dec., 2011 and the position deteriorated thereafter.
- xii. Price undercutting has nothing to do with comparison of non injurious price and NSR. Price undercutting is the difference between selling price and import price.
- xiii. Profitability of the domestic industry deteriorated significantly in 2011 as would be seen from the month by month and quarter by quarter movements in profitability between 2010 and 2011.
- xiv. Imports from subject countries are significant in the POI. Further, significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India.
- xv. Assuming though not admitting that domestic industry is no longer suffering injury, the same is grossly insufficient for premature withdrawal of anti dumping duty. At the stage of Mid Term Review, the interested parties seeking revocation of anti dumping duty must establish “no injury to domestic industry is likely” in the event of withdrawal of anti dumping duty.
- xvi. The obligation of establishing “no likelihood of injury” is not on the domestic industry. It is on the petitioner before the Designated Authority. The authority is not required to determine the “justification for continuation”. “Justification for continuation” is different from “justification for withdrawal”.
- xvii. The non injurious price should include following expenses :
 - a. Indian freight from factory to extended warehouse within the country.
 - b. End period quantity discounts
 - c. Cash discounts

H.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

44. The injury analysis made by the authority hereunder *ipso facto* addresses the various submissions made by the interested parties.

45. The authority has considered import data as per DGCI&S data. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the

confidentiality claim. On being satisfied, the authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.

46. Regarding comparison of present POI factors with earlier case POI factors, it is noted that factors are examined based on well established practice of the Authority, which are discussed in detail in foregoing paras. The issue of landed price of the subject goods being higher than the selling price of Domestic Industry i.e. negative price undercutting; has been examined by the Authority in the relevant paras in this statement. With regard to the issue of absence of injury to the Domestic Industry, the Authority has examined the same in the following section of this statement. With regard to price undercutting and underselling, due to significant changes in input cost and cost of production, selling price, analysis has been done by the Authority on month to month basis. With regard to the submission for considering market value of investment, the Authority has determined the capital employed based on net fixed assets as per its consistent practice and Annexure III of the rules. The Authority has determined the non-injurious price in terms of the principles mentioned in Annexure III to the rules after verifying the data submitted by the domestic industry to the extent considered relevant.

ASSESSMENT OF DEMAND AND MARKET SHARE

47. The designated authority has determined the demand for the subject goods as the sum of domestic sales of the domestic industry, sales of other Indian producer and imports of the subject goods into India from all sources. The demand so assessed is shown in the following table. It is seen that the demand for the subject product in the country has increased in the period of investigation after a decline in 2008-09 and 2009-10.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI	POI Annualised
Sales of domestic industry	MT	43,723	40,924	37,671	46,889	37,511
Sales of other Indian producer	MT	29,247	31,451	31,958	44,741	35,793
Sales of all domestic producers	MT	72,970	72,375	69,629	91,630	73,304
Imports from						
- Subject countries	MT	33,352	22,541	10,571	32,232	25,786
- European Union	MT	25,263	8,457	1,776	14,933	11,947
- South Africa	MT	7,058	8,176	8,794	14,176	11,341
- Singapore	MT	1,031	5,907	1	3,123	2,498

- Other countries	MT	67,070	67,607	89,519	118,266	94,612
Total Imports	MT	100,422	90,148	100,090	150,498	120,398
Demand/consumption	MT	173,392	162,522	169,719	242,128	193,702

VOLUME EFFECT OF DUMPED IMPORTS

IMPORT VOLUME

48. With regard to the volume of the dumped imports, the authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the authority has relied on the import data procured from DGCI&S. The volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analysed as under:

Particulars	UNIT	2007-08	2008-09	2009-10	POI	POI Annua- lised
Subject countries	MT	33,352	22,541	10,571	32,232	25,786
European Union	MT	25,263	8,457	1,776	14,933	11,947
South Africa	MT	7,058	8,176	8,794	14,176	11,341
Singapore	MT	1,031	5,907	1	3,123	2,498
Others countries	MT	67,070	67,607	89,519	118,266	94,612
Total imports	MT	100,422	90,148	100,090	150,498	120,398

49. The authority notes that the imports from subject countries had declined in POI as compared to the base year. The Authority further notes that the imports from subject countries had declined sharply till 2009-10 and thereafter increased sharply in POI as compared to 2009-10. The Authority further notes that this increase is in spite of antidumping duty in force during the period. The Authority also notes that the imports from other countries are showing an increasing trend.

PRICE EFFECT

50. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II(ii) of the rules lays down as follows

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the designated authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in

India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

51. In a review investigation, the Authority is required to examine whether there has been a significant price effect by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether there is likelihood of recurrence of price effect in case duty is revoked.
52. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the designated authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In order to assess the effect of imports on the domestic market, the authority analyzed import prices over the injury period. The authority determined the net sales realization of the domestic industry considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty and cess thereon.
53. **Price undercutting:** In order to assess whether imports from subject countries were undercutting the prices of the domestic industry, the authority has compared the net sales realization (at ex-factory level) of the domestic industry with the landed price of imports over the injury period as per details given in the table below:

Particulars		2007-08	2008-09	2009-10	POI
Landed value – Subject Countries					
European Union	Rs/Mt	67,721	57,391	56,083	84,445
South Africa	Rs/Mt	64,555	52,962	48,826	73,308
Singapore	Rs/Mt	66,290	51,519	-	80,773
Net Selling Price	Rs/Mt	***	***	***	***
Net Selling Price	Index	100	92	92	138
Price undercutting					
European union	Rs/Mt	***	***	***	***
South Africa	Rs/Mt	***	***	***	***
Singapore	Rs/Mt	***	***	***	***
Price Undercutting					
European Union	%	***	***	***	***

South Africa	%	***	***	***	***
Singapore	%	***	***	***	***
Price Undercutting					
European Union	Range	0-10%	5-15%	10-20%	10-20%
South Africa	Range	0-10%	10-20%	20-30%	20-30%
Singapore	Range	0-10%	15-25%	-	10-20%

The authority notes that the price undercutting by the imports from subject countries without the anti dumping duties is significant.

- 54. Price underselling:** In order to assess whether imports from subject countries were underselling the prices of the domestic industry, the authority has compared the month wise non-injurious price (at ex-factory level) of the domestic industry with the month wise landed price of imports during POI. The weighted average underselling was negative for the imports from all the subject countries during POI.

PRICE SUPPRESSION AND DEPRESSION

- 55.** In order to assess whether imports from subject countries were suppressing/depressing the prices of the domestic industry, the authority has compared the cost of sales with the net sales realization (at ex-factory level) of the domestic industry over the injury period as per details given in the table below:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***
	Index	100	101	102	126
Net sales realization	Rs./MT	***	***	***	***
	Index	100	92	92	138

- 56.** The authority notes from the above Table that though there was increase in cost of sales during the entire injury period, the selling price increased in POI only. The authority further notes that there was neither price depression nor price suppression during the POI.

ECONOMIC PARAMETERS RELATING TO THE DOMESTIC INDUSTRY

- 57.** Annexure II to the AD rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of the dumped imports on domestic

producers of the subject goods. Further Annexure II (iv) of the rules lays down as follows“

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

PRODUCTION, CAPACITY AND CAPACITY UTILIZATION, SALES

58. Information on capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry has been as under:-

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI	POI Annua- lised
Installed capacity	MT	40,000	40,000	40,000	50,000	40,000
Production	MT	41,908	42,641	36,751	47,745	38,196
Capacity utilization	%	105	107	92	95	95
Domestic sales	MT	43,723	40,924	37,671	46,889	37,511
Demand	MT	173,392	162,522	169,719	242,128	193,702

59. It is noted that production and capacity utilisation of the domestic industry declined significantly in 2009-10 and thereafter improved marginally in POI. However, the same were lower than the levels achieved during the base year. The domestic sales showed a declining trend during the injury period. The decline in domestic sales was significant in POI as compared to base year, even though there was steep increase in demand for the PUC during POI.

PROFITS, RETURN ON INVESTMENT AND CASH FLOW

60. Profits, return on investment and cash flow of the domestic industry has been examined as under:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI	POI Annua- lised
Profit before interest and tax	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
	Index	100	27	26	192	153

Return on capital employed	%	***	***	***	***	***
	Index	100	29	29	159	159
Cash profit	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
	Index	100	23	24	190	152
Profit/loss	Rs./MT	***	***	***	***	***
	Index	100	33	30	214	214

61. The authority notes from the above table that Profit before Interest and Tax (PBIT), Cash profit, Profit/loss per Mt and Return on investment of the domestic industry declined till 2009-10 and thereafter sharply increased in POI as compared to the base year.

EMPLOYMENT AND WAGES

62. It is noted that the domestic industry is a multi product multi location company. There may not be direct effect of dumping on employment levels of the domestic industry. Status of employment levels and wages of the domestic industry has been as under:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI	POI Annualised
No of employees	Nos	***	***	***	***	***
	Index	100	94	94	109	109
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
	Index	100	102	105	142	113

63. The authority notes that the employment level of the domestic industry has remained stable over the period of injury whereas wages have shown a positive trend during the POI period.

PRODUCTIVITY

64. The productivity of the domestic industry is given in the following table:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Productivity per day	MT	120	122	105	101

	Index	100	102	88	84
--	-------	-----	-----	----	----

65. The authority notes that productivity of the domestic industry has steeply declined during POI in line with the decline in production.

INVENTORIES

66. The authority has examined the inventory level of the domestic industry, which is given in the following table:-

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Opening stock	MT	2,307	492	2,209	1,289
Closing stock	MT	492	2,209	1,289	2,137
Average stock	MT	1,399	1,351	1,749	1,713
	Index	100	97	125	122

The Authority notes that while the average inventory level of the subject goods has increased sharply in POI as compared to the base period, the stock at the end of the relevant periods has shown a sharp increase in POI as compared to the base period.

GROWTH

67. On examination of various economic parameters of the domestic industry, the authority notes that the volume parameters such as production and sales have shown negative growth; various price parameters of the domestic industry showed positive trend on overall basis.

ABILITY TO RAISE CAPITAL

68. The domestic industry is a multi product company. Their ability to raise further investment has not been considered a significant factor showing injury. However, the domestic industry contended that should the dumping from the present sources persist, ability of the domestic industry to raise capital would suffer severely.

G. OTHER KNOWN FACTORS

69. During the POI, imports have been reported from subject countries of present investigation. However, imports from third countries are quite significant. Further, the CIF import prices from other countries are marginally higher. It is also noted that imports from some of the third countries are attracting anti-dumping duties.

CONTRACTION IN DEMAND AND/OR CHANGE IN PATTERN OF CONSUMPTION

70. Overall demand for subject goods has shown significant positive growth during the injury period. It is also noted that no significant change in the pattern of consumption has come to

the knowledge of the authority, nor any interested party has made any submission in this regard.

TRADE RESTRICTIVE PRACTICES OF AND COMPETITION BETWEEN THE FOREIGN AND DOMESTIC PRODUCERS

71. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The domestic industry competes among one another and at the same time competes with the landed price of the subject goods. The price of the domestic industry is determined by the landed price of subject goods. Further, imports from other sources have sizable presence in the indian market.

DEVELOPMENT OF TECHNOLOGY AND EXPORT PERFORMANCE

72. The investigation has not brought out any evidence to show that there was any significant change in technology which could have caused injury to the domestic industry.

EXPORTS BY THE DOMESTIC INDUSTRY

73. Exports of the domestic industry are quite low in volume. Further, the price and profitability in the domestic and export market has been segregated by the authority for the purpose of present injury assessment. Therefore, export performance would not have affected the injury analysis made by the Authority in this statement.

H. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

74. The non-injurious price for the subject goods has been compared with the landed value of the exports of subject goods from the subject country for determination of injury margin. The injury margin has been worked out as per the follows:

Sl. No.	Country	Producer	Exporter	Injury Margin US\$/MT	Injury Margin %
1	South Africa	Merisol RSA Pty, South Africa.	Merisol RSA Pty, South Africa.	(***)	(3-8)
		Others	Others	(***)	(3-8)
3.	Singapore	Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd, Singapore (MPS).	Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd. (MAP).	(***)	(3-8)

4.		Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd, Singapore (MPS).	M/s MAP and Petrochem Middle- east (FZE), Dubai.		
5.		Others	Others	(***)	(3-8)
6.	European Union	All producers	All Exporters	(***)	(8-13)

I. LIKELIHOOD OF RECURRENCE OF INJURY IN THE EVENT OF REVOCATION OF EXISTING ANTI-DUMPING DUTY

I.1 VIEWS OF THE IMPORTERS, CONSUMERS, EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

75. The exporters, importers and other interested parties have submitted as under:-

- i. Previous two investigations conducted by the DGAD considered (a) volume of exports post poi (b) profitability of domestic industry post poi (c) post poi landed value of imports, NSR and NIP of the domestic industry and (d) third country exports.
- ii. While deciding post poi data, there is a need to put a limit to the post poi period. Otherwise, interested parties will keep on giving information for the most recent period and authority will find it hard to conclude investigation within the deadlines. Therefore, a period of 6 months post poi should be considered.
- iii. Imports from Singapore were coming in reduced quantities and at high import prices. Further, post poi imports from Singapore have stopped, thus establishing no likelihood of dumping and injury.
- iv. Post poi import volumes declined and import price increased substantially from European Union and South Africa. In a recently concluded investigation, DGAD has compared imports for 6 months post poi with imports for the same 6 months for previous years. Similar approach should be adopted.
- v. Domestic industry has earned significant profits in the poi as well as in the first quarter of the post poi. Losses in Q3 of 2011-12 are because of its own pricing decision.
- vi. Post poi import prices from subject countries were significantly higher than the import prices prevailing during poi.
- vii. When import price from USA coming at much lower price can be considered as not causing or likely to cause injury, then it shows that import price from subject countries will not cause of injury.

- viii. Export price from subject countries to third countries should be compared with the nip (as has been done earlier) and then should determine whether likelihood of injury on this account.
- ix. The authority, for the sake of consistency should continue to apply the same standards of examination of likelihood dumping and injury that were applied in the previous two investigations concerning the subject goods, in the present case also. Even the responding domestic producer (HOCL) during public hearing has clearly endorsed that application of such standards would be suitable in the present case as well.
- x. Volume of imports from July- December, 2011 is 16,484 Mt, which in the corresponding previous year was 33,904 Mt which clearly shows decline in subject imports post poi.
- xi. Domestic industry had significant profits in the post poi. The month of oct-2011 should be excluded being an abnormal month caused by lower capacity utilization. Had the domestic industry maintained the same level of capacity utilization during the month of October 2011, as was during July to September 2011, the domestic industry would have earned reasonable profits in October, 2011.
- xii. Selling price of domestic industry during November, 2011 was Rs.76,485/Mt whereas the published price list of phenol on the website of HOCL showed a price of Rs.90,000/Mt (bulk).
- xiii. NSR is higher than the NIP for the post poi period.
- xiv. There exists no likelihood of dumping and therefore no question of likelihood of injury in the present facts of the case. It is an established practice in the European Commission that if there is no likelihood of dumping, the question of likelihood of injury does not arise.
- xv. Authority should examine whether a “clearly foreseen and imminent” threat exists for the domestic industry. Only if the answer is a positive affirmative should the duties be continued. Performance of the domestic industry has improved substantially over the injury period in terms of profitability and selling prices as well
- xvi. In MTR final findings on acrylic fibre, likelihood has been determined on the basis of improved performance of the domestic industry, which is also the case here. Even if it is argued that this improvement is due to the levying of duties, it must be noted that it only implies that the duties have fulfilled their purpose whereby any further continuance of duties would only favor domestic industry unfairly.
- xvii. SSR final finding on Metronidazole is referred, wherein reliance was placed on the period of investigation performance of the domestic industry and the dumping margin to determine whether there is a likelihood of further injury from dumping.
- xviii. Post disclosure, it has been submitted that there is no existing or continued injury to the domestic industry even though certain volume parameters have shown declining trend during the POI as compared to base year. It has further been submitted that the domestic industry has created monopoly on prices of the subject goods as the selling price of domestic industry is almost 20-25% higher than NIP and landed price from subject

countries because of anti-dumping duty. It has further been submitted that there is no Likelihood of Recurrence of Injury in the event of revocation of existing Anti-dumping duty from European Union. It has further been added that there is negative injury margin from EU during Post POI period as per disclosure statement. Thus, any injury to the domestic industry during Post POI period is not related to imports from EU. It has further been submitted that though the price undercutting is positive, the injury margin is negative from EU. With regard to export prices of subject goods from EU to third countries, it is submitted that such third country prices are not disclosed by the Authority in the disclosure statement while these prices are not privy to any exporter/producer or domestic industry. They have requested the Authority to determine monthly injury margin for the exports from EU to third countries and not on the annual basis as has been worked out by the Authority in the disclosure statement. There has been no examination made by the Hon'ble Designated Authority to establish that the imports from the subject countries have caused the alleged decline in the profit, selling price and return of the Domestic Industry in view of the admitted fact that there is voluminous increase in the imports from other countries during this period. Also, the non-disclosure of the critical parameters such as non injurious price, underselling, undercutting, import data and volumes of the subject merchandise post period of investigation have been withheld. It has also been submitted by some of the interested parties representing exporters from South Africa that export prices to third countries should also be analysed in the context of determination of likelihood of dumping and injury in the event of revocation of anti dumping duty. It has also been submitted by some of the interested parties representing exporters from Singapore that there is no threat of injury to the domestic industry on account of exports of subject goods from Singapore. One of the interested parties has mentioned that the objective of issuing the disclosure statement is to provide an opportunity to all the interested parties to review the facts and legal issues that have arisen in a case and offer their comments thereon so that they can effectively defend their interests. However, the Authority has given effectively only one working day to submit comments on it, which is not sufficient. It has been submitted that the NIP applied for European Union and Singapore is far higher as compared to the NIP applied for South Africa. It is not known whether the authority has calculated NIP for the domestic industry or for every exporting country or exporter. It has also been submitted that it is a common knowledge that South Africa exports a good proportion of 'off specification' phenol to other third countries on prices lower than India.

VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

76. The domestic industry has submitted as under:-

- i. Method of determining likelihood in previous MTR is objected to. However, even if the same methodology is followed, likelihood would be established.
- ii. Lasting nature of changed circumstances: Post period of investigation performance upto most recent period must be examined.
- iii. There is no legal prescription that the authority should restrict to the investigation period, or consider six months after the investigation period to examine likelihood. The rules clearly provide for consideration of past and present data and come to a conclusion with regard to likely future developments.
- iv. The WTO jurisprudence very clearly shows that the authority should consider the performance of the domestic industry upto the most recent period, i.e., the past and the present performance must be examined.
- v. It is an established legal position that the obligation to establish need for withdrawal is on the foreign producers, importers and consumers. The domestic industry is not required to establish the need for continuation, given the very scope of the investigation.
- vi. In SSR investigation the duty was extended despite negative injury margin based on likelihood analysis.
- vii. When the domestic industry has once again started suffering injury, evidently, it is not established that the injury to the domestic industry is not likely to continue or recur, if the said anti-dumping duty is removed or varied.
- viii. Post disclosure, the domestic industry has asked for full disclosure of NIP and expressed their inability to offer their comments in the absence of the same. They have further submitted that the injury margin in respect of exports to third countries is positive in respect of each of the three subject countries and it is not established that the injury to the domestic industry is not likely to continue or recur, if the said anti-dumping duty is removed or varied. Further, it has been submitted that the Designated Authority should examine in mid term review whether injury to the domestic industry is not likely and only if the Designated Authority comes to a conclusion that the injury to the domestic industry is not likely, the Designated Authority can revoke the anti dumping duty. It has further been submitted that the information on record clearly shows that the domestic industry's performance in terms of volume parameters was adverse while the same in terms of price parameters was not adverse. Performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales volumes, capacity utilization, inventories, market share deteriorated. It must therefore be concluded that the domestic industry has suffered volume injury. They have further added that between volume and price injury, it is not necessary that both form of injury should co-exist. Even if the domestic industry has suffered adverse volume effect, it must be concluded that the domestic industry has suffered injury. Since the domestic industry has suffered adverse volume effect, the present anti dumping duty cannot be revoked.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

77. The authority in a mid-term review investigation, besides determining whether the subject goods are continuing to enter the Indian market at dumped prices, has to determine whether

the subject goods are likely to be exported at dumped prices from the subject countries in the event of withdrawal of anti dumping duties. The Authority is further required to examine whether injury to the domestic industry is likely to continue or recur due to the dumped imports if the duty is removed or varied.

78. The authority has examined the likelihood of recurrence of injury to the domestic industry on the basis of information and evidence presented by various interested parties during the course of the investigations. The authority has examined the contention of various interested parties. It is noted that the authority had earlier recommended revocation of anti dumping duties levied on subject goods from different countries. It was held by the authority that the domestic industry's performance had improved significantly in the respective period of investigation and there was no likelihood that the injury to the domestic industry will recur. However, in the instant case, it is noted that the domestic industry's performance has once again started deteriorating. In addition, the authority has examined the likelihood of injury and dumping by conducting a monthly analysis of the post POI information. The Post POI data regarding imports have been taken from the information submitted by the cooperating producers and exporters from subject countries, information submitted by the domestic industry from various sources including information from Singapore trade statistics and UN Comtrade data.
79. It is noted that several interested parties have argued that the post-poi performance should be analyzed only upto 6 months. The domestic industry contended that there is no such legal requirement and, on the contrary, past and future facts need to be considered. The Authority has confined its post poi analysis for 6 months after the poi as per past practice.
80. It is also noted that neither the responding exporters nor other interested parties have established with positive evidence like exports to third countries by the subject countries that there is no likelihood of dumping and consequent injury to the domestic industry. Since much of the information about the exports to third countries by the subject countries is available on annual basis only, the authority has considered the relevant data for the years 2010 and 2011.
81. The Authority has addressed the above comments of the interested parties to the extent considered relevant at relevant sections. Some of the specific comments have been examined below:
82. With regard to the submission regarding inadequate time provided to the interested parties to furnish their comments on the disclosure statement, the Authority notes that it had given 4 days to furnish responses keeping in view the need to complete the investigation within the extended time. Further, the interested parties have been given adequate opportunities to inspect the public file and attend oral hearings (twice) to make known their views and those views have been considered to the extent relevant.

83. The discrepancies in the disclosure statement pointed out by some of the interested parties have been corrected.
84. The details of element-wise claim of the cost of sales claimed by the domestic industry along with the amount allowed by the Authority were furnished to the domestic industry. Further, the basis of calculation of NIP has also been furnished as per the practice of the DGAD.
85. With regard to the comments of interested parties on injury to the domestic industry on account of dumped imports and likely diversion of dumped third country exports by the subject countries, the Authority has addressed them in relevant sections of injury and likely injury analysis.
86. With regard to the submission regarding adoption of post-POI data submitted by the domestic industry in the final findings, the Authority notes that the post-POI data submitted by the domestic industry has been considered after reconciliation with the audited accounts.
87. With regard to the submission regarding adoption of post-POI data submitted by the domestic industry in the final findings, the Authority notes that the post-POI data submitted by the domestic industry has been considered after reconciliation with the audited accounts for the relevant period.
88. As regards the submission that the Authority has adopted different NIP for different countries, the Authority notes that it had determined month-wise NIP for the subject goods both for POI as well as post-POI which is uniform for all subject countries. However, since the month-wise quantity of imports of subject goods imported from subject countries goods differ, the weighted average NIP for each of the subject countries is not the same.
89. With regard to the submission that Kochi division of HOCL has earned a profit of Rs.226.02 crores in 2011-12, the Authority notes that it had earned a profit of only Rs.*** crores. It may also be mentioned that Kochi Division also produces other products besides Phenol..

VOLUME OF EXPORTS POST POI AND DUMPING AND INJURY MARGIN POST POI:

90. In order to examine the likelihood of dumping and injury to the domestic industry due to dumping of subject goods from the subject countries, the authority has undertaken a monthly analysis of the volume of exports of subject goods to India from the subject countries. This analysis has been done with respect to Singapore and South Africa on the basis of information submitted by the cooperating producers and exporters. In response to comments from interested parties to analyse the Post POI data on a monthly basis, the Authority has done month wise analysis of information of exports of subject goods from EU to India and it is noted that while dumping margin is positive during the post POI period, injury margin is negative. It is also noted that there is a positive dumping margin as well as injury margin in respect of imports of subject goods from South Africa during the Post POI period and these margins are considered significant.
91. In respect of exports of subject goods from Singapore during post POI to India, it is noted that though the dumping margin is positive, the injury margin is negative.

PROFITABILITY OF DOMESTIC INDUSTRY

92. In order to examine the likelihood of injury to the domestic industry due to dumped imports, in the post investigation period, the authority has also undertaken quarterly analysis of the cost of production, net sales realization and the profitability of the domestic industry during the period from July 2011 - December 2011.

Particulars	Unit	POI	2011-12 (Q2)	2011-12 (Q3)
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***
	Index	100	104	107
Net Selling Price	Rs/MT	***	***	***
	Index	100	94	83
Profit/loss	Rs/MT	***	***	***
	Index	100	57	(4)

93. It may be seen from the above Table that during the post POI period the domestic industry's performance has become adverse.

LANDED VALUES OF IMPORTS, NET SALES REALIZATION AND NON INJURIOUS PRICE

94. In the post poi period, the authority has also undertaken an analysis of the landed values of imports from the subject countries, vis-à-vis, NSR of the domestic industry. It is noted that the landed price of imports have remained significantly lower than the net selling price in respect of South Africa and EU showing significant positive price undercutting. However, the landed value of imports from Singapore during post POI has remained higher than the net selling price of the domestic industry showing negative undercutting.

EXPORT PRICES OF SUBJECT GOODS FROM SUBJECT COUNTRIES TO THIRD COUNTRIES:

95. In the absence of relevant information from the responding exporters, the authority has analysed the exports from subject countries to third countries based on the best available information and compared the same, after due adjustments, with NSR and the NIP of the domestic industry. It is noted that the exports from South Africa to third countries, after due adjustments, were below the NSR and NIP of the domestic industry during the post POI period. This suggests that the exports from South Africa if diverted to India would have led to positive dumping margin, price undercutting and injury margin thus establishing that injury to the domestic industry is likely in the event of withdrawal of anti dumping duty from South Africa. The Authority has done similar month wise analysis in respect of third country exports from EU and Singapore and it was noted that injury margin was negative during the post POI.

COUNCLUSIONS ON LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OR RECURRENCE OF INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY IN THE EVENT OF REVOCATION

96. It is noted that while the dumping margin of the subject goods imported from Singapore is negative, that from EU and South Africa during the period of investigation is positive. The injury margin during the same period is negative for all subject countries. However, both dumping margin and injury margin is positive for the post POI period from South Africa. It is also noted that exports from South Africa to third countries if diverted to India would have led to positive dumping margin, and injury margin thus establishing that injury to the domestic industry is likely in the event of withdrawal of anti dumping duty from South Africa. It is also noted that during the POI, there is no continuation of material injury to the domestic industry on account of imports of subject goods from subject countries. However subject goods are likely to enter the Indian market at dumped prices from South Africa should the present measures be withdrawn as the likely dumping margin and injury margin in respect of imports from south Africa is significant. Further, even though the domestic industry has improved its performance during the POI, the situation of domestic industry continues to be fragile especially after POI and therefore should the present anti dumping duties from South Africa be withdrawn, injury to the domestic industry is likely to recur. It is also noted that the injury to the domestic industry is not likely to continue or recur on account of imports of subject goods from Singapore and EU, if the said anti-dumping duty is removed.

J. Indian industry's interest & other issues

97. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply
98. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

K. FINAL FINDINGS:

99. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current and likely dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:
- i) The dumping margins of the subject goods imported from EU and South Africa is positive whereas for Singapore it is negative during the period of investigation.
 - ii) However subject goods are likely to enter the Indian market at dumped prices from South Africa should the present measures be withdrawn and the likely dumping margin and injury margin in respect of imports from South Africa is significant.
 - iii) The injury to the domestic industry is not likely to continue or recur on account of imports of subject goods from Singapore and EU, if the existing anti-dumping duty is withdrawn.
 - iv) Even though the domestic industry has improved its performance during the POI, the situation of domestic industry continues to be fragile. Further, should the present anti dumping duties from South Africa be withdrawn, injury to the domestic industry is likely to recur.

100. Having concluded that the situation of the domestic industry continues to be fragile and there is likelihood of continuation or resumption of dumping and injury on account of imports from South Africa, if the duties are withdrawn, the Authority is of the opinion that the measure is required to be extended in respect of imports from South Africa. However, the quantum of anti dumping duty in force need not be revised so far as South Africa is concerned. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends continuation of anti dumping duty on imports of subject goods from South Africa at the rates specified vide notification no. 15/9/2007-DGAD dated 04/08/2008 and Customs Notification No.114/2008 dated 31st October 2008. The anti dumping duties on subject goods from Singapore and EU is recommended to be withdrawn as the injury to the domestic industry is not likely to continue or recur on account of imports of subject goods from Singapore and EU, if the said anti-dumping duty is removed.
101. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
102. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

J. S. DEEPAK, Designated Authority